स्थापित 1968

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 5 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 नवम्बर 2020 ✦ वर्ष 9 ✦ कुल पृष्ठ 44 ✦ मूल्य ₹5

कोविड-19
कोरोना वायरस
फैलने से रोकें

अपने परिवार, समाज एवं
देश की सुरक्षा
आपके हाथ में है

स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

(19 अगस्त 1927 – 31 अगस्त 2016)

जैन समाज के लिये आपका योगदान एवं समाज को एक सूत्र में बांधे रखने का अन्तिम सन्देश सदैव स्मरणीय रहेगा।

आपका प्रेरणामय जीवन हमारे लिए सदैव पथ प्रदर्शक रहेगा।

MARSON'S

ISO 9001:2000 CERTIFIED COMPANY

समस्त परिवारीजन
स्टाफ एवं कर्मचारीगण

MARSON'S ELECTRICAL INDUSTRIES

(Prop. MEI Power Pvt. Ltd.)

www.marsonselectricals.com • E-mail : info@marsonselectricals.com

1/189, Delhi Gate, Civil Lines, Agra-282002 (India)

Ph : +91-562-2520027, 2850812 • Fax : +91-562-2851306

Works :

Mathura Road, Artoni, Agra - 282007 (India)

Ph : +91-2641448, 2642327-28 • Fax : +91-562-2641435

TRANSFORMERS EXPORTED TO OVER 15 COUNTRIES

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

Email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com

मूल्य ₹ 5/-

अंक 5 ✦ 25 नवम्बर 2020 ✦ वर्ष 9

कुल पृष्ठ : 44

पूर्व प्रकाशन मथुरा से, सम्प्रति जयपुर से प्रकाशित

महासभा पदाधिकारी

श्री आर.सी. जैन *(अध्यक्ष)*
(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)
एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर (राज.)-302018
मोबा. : 9414279070, 9829999335
E-mail : rcjainras@gmail.com

श्री राजीव रतन जैन *(महामंत्री)*
301-ए, सुख सागर अपार्टमेन्ट, 4, जानकी नगर मेन,
इन्दौर (म.प्र.)-452001, मोबा.: 9425110204
E-mail : jainrajeevratan@gmail.com

श्री अजीत जैन *(अर्थमंत्री)*
1द39, काला कुंआ हा.बोर्ड, अलवर (राज.)-301002
फोन : 0144-2360115, मोबा.: 9413272178
E-mail : akjain2021@yahoo.in

पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

डॉ. अनुपम जैन *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

श्री प्रकाश चन्द जैन *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार ''बी''
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

श्री पारस जैन गहनौली *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

श्री महेश चन्द जैन *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

संयोजक की कलम से....

कोरोना की महामारी

भारत सहित कई देशों में कोरोना महामारी की दूसरी लहर का आगमन हो गया है। एक तो सर्दी का मौसम एवं उस पर कोरोना महामारी का संक्रमण बहुत ही तेजी से फैल रहा है और अब इस महामारी का प्रभाव सोसाइटी के साथ-साथ परिवारों पर पड़ने लगा है। अगर परिवार के एक सदस्य को कोरोना का प्रभाव पड़ता है तो वह संक्रामक पूरे परिवार को अपनी चपेट में ले रहा है, लेकिन आज भी समाज के बन्धु इस बात से अनभिज्ञ होकर इस प्रकोप की चपेट में आ रहे हैं।

याद है जब यह संक्रमण अपने प्रारंभिक अवस्था में आया था उस समय जगह-जगह इसकी जागरूकता के कार्य, सरकारी स्तर पर किये गये। जगह-जगह सामूहिक सैनेटाइजर के कार्य हुए, लॉकडाउन लगा और हम सबने भी अपने आपको सुरक्षित रखने हेतु इस अभियान में पूर्ण सहयोग दिया, जगह-जगह भोजन वितरण एवं सामाजिक सहयोग की भावना जाग्रत हुई और व्यक्तियों एवं परिवार ने अपने आपको सुरक्षित पाया।

आज इसके विपरीत यह महामारी अपने चरम पर चारों ओर फैल रही है परिवार के परिवार इसकी चपेट में आ रहे हैं लेकिन फिर भी समाज, संस्थाऐं व साथ ही सरकार भी इस ओर उदासीन नजर आ रही है। इसका परिणाम कई परिवारों को अपने लोगों को काल का ग्रास बनते हुए देख रहे हैं। दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र राज्य पूरी तरह इसकी चपेट में आ चुके हैं। लोगों को ब्लड एवं प्लाज्मा की आवश्यकता पड़ रही है लेकिन उपलब्धता बहुत ही कम हो गई है। मेरा समाज के बन्धुओं से निवेदन है कि वे स्वयं अपनी एवं अपने परिवार की सुरक्षा का ध्यान रखें समाजिक कार्यक्रमों से अपनी दूरी बनाए रखें, एवं सामजिक सरोकार के तहत हमारी सभी शाखाएं अपने-अपने क्षेत्र में एक सामूहिक सहयोग की आवश्यकताओं पर नजर रख उनकी उपलब्धता का प्रयास सुनिश्चित करें, युवाओं को ब्लड एवं प्लाज्मा दान करने की अपील के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर समाज के डॉक्टरों का एक पैनल बना कर उनकी सेवाओं की निःशुल्क व्यवस्था एवं कोविड हेतु आवश्यक संसाधनों का उचित मूल्य पर वितरण एवं यथा सम्भव क्वारेंटाइन सेन्टरों की स्थापना की व्यवस्था करके समाज सेवा की सही तस्वीर पेश कर सकते हैं।

आशा है सभी जागरूक होगें एवं मेरी बात को प्रत्येक शाखा एक चैलेंज के रूप में स्वीकार कर सामजिक बन्धुओं को सेवा प्रदान करेगी। भगवान महावीर सभी को स्वस्थ्य रखें।

-चन्द्रशेखर जैन

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
यह लेखकों के निजी विचार माने जाने चाहिये।

भावभीनी श्रद्धांजलि

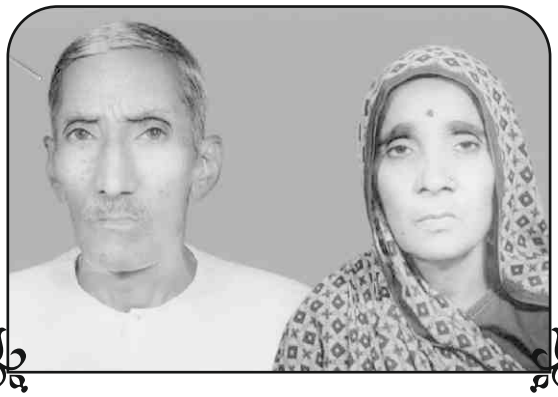

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)
(स्वर्गवास : 30.12.2018)

हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र :
पदम चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
पारस जैन-रश्मि जैन,
पौत्री-दामाद :
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी
पड़पोत्री-पौत्र :
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

पुत्र :
अनूप चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त जैन-मधु जैन
पौत्री-दामाद :
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप
पड़पौत्र :
रोबीन-मानस

निवासः- बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

भगवान महावीर और उनकी शिक्षायें

जैनधर्म विश्व के अत्यन्त प्राचीन धर्मों में से एक है। जैन परम्परानुसार यह अनादिनिधन एवं प्राकृतिक धर्म है अर्थात् इसका न कोई आदि है और न अन्त। विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्मग्रंथ ऋग्वेद एवं अन्य धर्म ग्रंथों–श्रीमद्भागवत, मार्कण्डेय, अग्नि, वायु, शिव, स्कंद, नाग आदि पुराणों, उपनिषदों, मज्झिमनिकाय (बौद्ध धर्म ग्रंथ) आदि में प्राप्त उल्लेखों से स्पष्ट है कि ऋग्वेद के रचनाकाल से भी पूर्व जैनधर्म विद्यमान था। मोहनजोदड़ों सभ्यता के अवशेषों में नग्न कायोत्सर्ग मूर्ति का मिलना भी इसकी प्राचीनता का ज्वलंत प्रमाण है। पूर्व में इसे श्रमण, व्रात्य या निर्ग्रन्थ धर्म के नाम से जाना जाता था।

तीर्थंकर ऋषभदेवः–

वर्तमान कालखण्ड में आज से असंख्यात वर्ष पूर्व अयोध्या नगरी में महाराजा नाभिराय के घर ऋषभदेव ने सर्वप्रथम षट्कर्मों असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य एवं शिल्प की शिक्षा देकर मानवता के विकास का पथ प्रशस्त किया। व्यवस्थित कृषि, समाज व्यवस्था, राज व्यवस्था, पर्यावरण संरक्षण की पद्धतियों के विकास का श्रेय ऋषभदेव को ही है। आपके भरत, बाहुबली आदि 101 पुत्र तथा ब्राह्मी एवं सुन्दरी नामक 2 पुत्रियाँ थीं। इन्हीं चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर अपने देश का नाम भारतवर्ष पड़ा है एवं इन्हीं बाहुबली की अद्वितीय मूर्ति विश्व के आश्चर्य के रूप में श्रवणबेलगोला–कर्नाटक में स्थापित है, जिसका महामस्तकाभिषेक फरवरी–18 में सम्पन्न हुआ है। राजा के रूप में अपनी पुत्रियों ब्राह्मी को लिपि विद्या एवं सुंदरी को अंक विद्या का सर्वप्रथम ज्ञान देकर आपने नारी शिक्षा का सूत्रपात किया।

ऋषभदेव के निर्वाण के पश्चात् 23 अन्य तीर्थंकर हुए, जिनके नाम निम्नवत् हैं–

अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ, पद्मप्रभु, सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभु, पुष्पदंत (सुविधिनाथ), शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, वासुपूज्य, विमलनाथ, अनंतनाथ, धर्मनाथ, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रतनाथ, नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर।

देश–विदेश में इन तीर्थंकरों की सहस्रों मूर्तियाँ सुरक्षित हैं। साथ ही तीर्थंकरों के बारे में जैन एवं जैनेतर साहित्य में भी पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है, जो जैन परम्परा के देशव्यापी प्रभाव तथा एशिया महाद्वीप के अन्य पड़ोसी राष्ट्रों से सांस्कृतिक संबंधों को व्यक्त करती है। भगवान ऋषभदेव की विश्व की सबसे विशाल मूर्ति 108 फीट ऊँची ऋषभगिरि मांगीतुंगी में 2016 में बनी है।

तीर्थंकर महावीरः–

जैन परम्परा के 24 वें एवं अंतिम तीर्थंकर हैं भगवान महावीर। आपको वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी जाना जाता है। ईसा से 599 वर्ष पूर्व बिहार के कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला की एकमात्र संतान के रूप में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी (महावीर जयंती) को आपका जन्म हुआ था। 30 वर्ष तक राजप्रासाद में रहकर आप आत्म स्वरूप का चिंतन एवं अपने वैराग्य के भावों में वृद्धि करते रहे। 30 वर्ष की युवावस्था में आप महल छोड़कर जंगल की ओर प्रयाण कर गए एवं वहाँ मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण किया। तदुपरांत 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में भ्रमण कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। ईसा से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक अमावस्या (दीपावली) को उषाकाल में बिहार प्रान्त के अंतर्गत पावापुरी में आपको निर्वाण प्राप्त हुआ। इसकी स्मृति स्वरूप ही जैन धर्मावलम्बी दीपावली पर्व मनाते हैं।

भारत सरकार द्वारा 1973 में भगवान महावीर का 2500 वाँ निर्वाण महामहोत्सव राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया था एवं वर्ष 2001 में उनका 2600 वाँ जन्म महोत्सव मनाया गया, जिसके माध्यम से भारत की महान सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, जीवों पर दया, शाकाहार, साम्प्रदायिक सद्भाव, वैचारिक सहिष्णुता संयमित जीवन पद्धति के प्रचार–प्रसार एवं समाज के निर्बल वर्ग की मदद की योजनाएँ संचालित की गईं है। हम उनकी कतिपय प्रमुख शिक्षाओं को सूचीबद्ध कर रहे हैं।

तीर्थंकर महावीर की शिक्षायें:–

वास्तव में महावीर ने न तो कोई नया धर्म चलाया और न कोई नया सिद्धांत स्थापित किया। उन्होंने तो पूर्ववर्ती तीर्थंकरों द्वारा उपदिष्ट शाश्वत सिद्धांतों की तत्कालीन समाज के हित एवं उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप व्याख्या प्रस्तुत की। 'सर्वजन हिताय' की भावना से अनुप्राणित उनके उपदेशों का तत्कालीन समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा था। इस

कारण भ्रांतिवश लोग उन्हें जैनधर्म का संस्थापक मानने लगे।

1. **अहिंसाः–** अहिंसा विश्व के सभी धर्मों का मूलाधार हैं, किन्तु जैनधर्म में अहिंसा की जितनी सूक्ष्म, तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक विवेचना है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। मात्र मानव ही नहीं अपितु किसी भी प्राणी के प्राणों का किसी भी कार्य हेतु हनन करना, हनन करने की प्रेरणा देना अथवा उसका समर्थन करना हिंसा है। केवल प्राणों का हनन ही नहीं, उसे मानसिक रूप से कष्ट पहुँचाना या पहुँचाने के प्रयास में सहभागी होना या समर्थन करना भी हिंसा है। इतनी सूक्ष्म विवेचना के बाद इसे व्यावहारिक रूप भी दिया गया है। जहाँ जैन साधु/साध्वियाँ (आर्यिकायें) अहिंसा का पूर्णरूपेण पालन करते/करती हैं, वहीं जैन धर्मावलम्बी सामान्य जनों (श्रावकों) को संकल्प पूर्वक किसी प्राणी (पशु–पक्षी, मानव आदि) के वध का निषेध है। उद्योग, व्यापार, कृषि, दैनिक जीवन की क्रियाओं, राष्ट्र एवं समाज पर विपश्रि के समय अपने कर्श्रव्य के पालन में हिंसा करने के भाव न होते हुए भी यदि हिंसा हो जाती है तो वह क्षम्य है।

पर्यावरण संरक्षणः– प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूक जैन तीर्थंकरों ने जीव के 2 भेद बताये– त्रस एवं स्थावर। त्रस के अंतर्गत आते हैं कीट–पतंगे, पशु–पक्षी एवं मानव आदि। स्थावर के अंतर्गत आते हैं अत्यन्त सूक्ष्म जीव वायरस आदि। इनके पाँच भेद हैं–

1. **वनस्पतिकायिक–** सभी प्रकार की वनस्पतियाँ।
2. **अग्निकायिक–** अग्नि ही है काया जिनकी। ज्वालामुखी में भी जीवन है।
3. **वायुकायिक–** वायु ही है काया जिसकी।
4. **जलकायिक–** जल ही है काया जिनकी।
5. **पृथ्वीकायिक–** पृथ्वी ही है काया जिनकी।

इन पाँच प्रकार के जीवों के घात से यथाशक्ति बचने का निर्देश अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि आधुनिक समाज ने पेड़–पौधों, वनों की अंधाधुंध कटाई न की होती, पृथ्वी का अनावश्यक उत्खनन न किया होता, जल, वायु एवं अग्निकायिक जीवों एवं उन पर आश्रित जलचर तथा नभचर जीवों के प्रति दया भाव रखते हुए वायुमण्डल, नदियों, तालाबों, समुद्र में विषैले पदार्थ न डाले होते तो आज जो पर्यावरण प्रदूषण की भयावह समस्या पैदा हो रही है वह उत्पन्न ही नहीं होती। अभी भी समय है, हम आवश्यकताओं को सीमित करने वाली संयमित जैन जीवन शैली अपना लें तो मानवता के अस्तित्व के सम्मुख आया संकट टल सकता है। ग्लोबल वार्मिंग एवं हिम युग के आसन्न संकट से बचने का यही उपाय है। कोरोना संकट से बचने के लिए भी हम सबको जैन जीवन पद्धति ही अपनानी पड़ी। इस बीमारी का मूल भी वीभत्स मांसाहार ही है।

2. **सत्यः–** किसी वस्तु, विचार के सभी पक्षों को जानना एवं एक साथ उनको व्यक्त करना असंभव है। अतः हमें अपने विचार एवं पक्ष पर ही आग्रहशील न होकर दूसरे के विचार एवं पक्ष को भी धैर्यपूर्वक सुनना चाहिए। संभव है कि किसी अन्य दृष्टि से दूसरे के विचार भी सत्य हों इससे सद्भाव स्थापित होता है एवं मतभेद कम होते हैं। भारतीय समाज को आज इस सद्भाव की विशेष आवश्यकता है। यही अनेकांतवादी दृष्टिकोण है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समस्याओं के समाधान हेतु द्विपक्षीय बैठकों में परस्पर दोनों पक्षों के विचारों को धैर्यपूर्वक सुनकर सर्वमान्य समाधान की खोज इसी सिद्धांत के आधार पर की जाती है।

3. **अचौर्यः–** किसी की बिना दी हुई वस्तु को ग्रहण करना चोरी है। समानान्तर बही खाते रखना, टैक्स चोरी करना, मिलावट करना, जमाखोरी करना, धोखेबाजी करना सभी चोरी के अन्तर्गत आते हैं। स्वस्थ, शांतिप्रिय समाज व्यवस्था हेतु अचौर्य जरूरी है। जी.एस.टी. के कठोर प्रावधान कतिपय व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली टैक्स चोरी रोकने हेतु ही किए गए हैं, जो सीधे ईमानदार व्यक्तियों को कष्ट पहुँचा रहे हैं।

4. **ब्रह्मचर्यः–** विवाह संस्था भारतीय समाज का वैशिष्ट्य है। इस संस्था के कमजोर पड़ने पर पाश्चात्य समाज से आई विसंगतियाँ एवं छिन्न–भिन्न होती समाज व्यवस्था सर्वविदित है। असंयमित, अतिभोगवादी जीवन शैली से जनित महामारी (एड्स) से आज सारा विश्व चिंतित है। महावीर ने साधुओं हेतु पूर्ण ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थों हेतु पाणिग्रहीता पत्नी/पति के साथ संतोषपूर्वक गृहस्थ धर्म के पालन का उपदेश दिया।

5. **अपरिग्रहः–** न्यायपूर्वक उपार्जित धन से अपने एवं अपने परिवार की सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के उपरांत शेष राशि का राष्ट्र एवं समाज हित में उपयोग करना, उस धन का स्वयं को स्वामी नहीं, अपितु संरक्षक मानना ही अपरिग्रह है।

महावीर के उपदेशों में एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। एक जीवन पद्धति है। आज की समाज को इस जीवन पद्धति की कहीं ज्यादा जरूरत है। आइए उनके निर्वाण दिवस पर भगवान महावीर की शिक्षाओं पर अमल करने का संकल्प करें।

–डॉ. अनुपम जैन
ज्ञानछाया, डी–14 सुदामानगर, इन्दौर

अपरिग्रहवाद

जैन धर्म के पांच व्रतों में एक अपरिग्रह है। अपरिग्रह का अगर शाब्दिक अर्थ लगाया जाए तो होगा परिग्रह ना करना, संग्रह ना करना। आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह ना करना अपरिग्रह है । परन्तु वास्तविक जीवन में हम इसका बिल्कुल उल्टा देखते हैं। जीवन के लिए जितनी आवश्यक वस्तुएँ है उनका हम अधिकाधिक संग्रह करना चाहते है। यहाँ तक कि अनावश्यक वस्तुएँ जिनकी हमें जिन्दगी में बहुत कम या शायद कभी आवश्यकता ही ना पड़े उनका भी भरपूर संग्रह करते हैं। ये दोनों ही स्थितियों मानव जाति के लिए घातक हैं। आवश्यक वस्तुओं का अनावश्यक संग्रह करने से इनकी कमी आएगी और जरूरतमंद लोगों के लिए ये वस्तुएँ दुर्लभ होती जाएंगी। दूसरी ओर अनुपयोगी वस्तुओं के संग्रह से समाज के संसाधनों पर व्यर्थ ही दबाव पड़ेगा। इस प्रकार मानव जाति को ऐसी दुविधा से निकालने के लिए ही अपरिग्रह व्रत जैसी अवधारणा का जन्म हुआ है।

अपरिग्रह व्रत संसाधन वितरण का एक वैज्ञानिक और मानवीय ढंग है। इस व्रत की यह परिकल्पना है कि मानव स्वेच्छा से अनावश्यक संग्रह पर रोक लगाए। वास्तव में यह उचित भी है कि संसाधन वितरण सम्यक् रूप से हो। यह धरती मानव की Need को पूरा कर सकती है greed नहीं। मानव की यह प्रकृति है कि कितना भी संग्रह कर ले, लेकिन और अधिक संग्रह की प्रवृत्ति बनी रहती है। यदि किसी व्यक्ति को दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति बना दिया तो भी वह संतुष्ट नहीं होता। सबसे अमीर बनने पर भी वो नये लक्ष्य निर्धारित करता है और नए कीर्तिमान स्थापित करना चाहता है।

अपरिग्रही होने का सर्वोत्कृष्ट रूप जैन संतों में देखने को मिलता है जो सम्पूर्ण संसार की समस्त सुख–सुविधाओं को त्याग देते है। वास्तव में अपरिग्रह की सर्वोच्च अवस्था तो दिगम्बरत्व ही है। प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह जैन संतों के समाज अपरिग्रही होगा परन्तु मानव जाति के उत्थान के लिए आवश्यक है कि यह समाज आवश्यकता आधारित समाज (Need based society) बने न कि लोभ आधारित समाज (Greed based society)

जैन दर्शन में अपरिग्रह को अत्यन्त ऊँचा स्थान दिया है तथा इसकी इतनी सूक्ष्म व्याख्या की है कि व्यवहार में परिग्रह का कोई भी अंश ना छूँ पाए। जैन शास्त्रों के अनुसार अपरिग्रह व्रत के पालनकर्ता को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा यह व्रत खण्डित होता है, वे हैं–

(i) अधिक सवारी रखना।

(ii) अनावश्यक वस्तुओं का अधिक संग्रह करना।

(iii) दूसरों का वैभव देखकर आश्चर्य करना। दूसरों का वैभव देखकर आश्चर्य करने से व्यक्ति की ईर्ष्या–द्वेष वृत्ति जागती है और इसी ईर्ष्या के वशीभूत वह व्यक्ति भी दूसरों के समान वैभवशाली बनने की कामना करने लगता है। इन कार्यों को वह येनकेन प्रकारेण करना चाहता है। ऐसी स्थिति व्यक्ति के दुर्गुणों को जगा देती है।

(iv) अति लोभयुक्त परिणाम रखना। इसमें व्यक्ति भविष्य में अधिक लाभ होगा ऐसा सोचकर वस्तुओं का संग्रह करता है। इस प्रकार वस्तुओं की कृत्रिम कमी आ जाती है और कालाबाजारी बढ़ती है।

(v) पशु, नौकर आदि से अत्यधिक काम करना। पशु बोल नहीं सकते उनसे अत्यधिक काम लेना गलत है। इसी प्रकार नौकर आदि से भी ज्यादा काम लेना अमावनीयता ही है।

परिग्रह वास्तव में आन्तरिक इच्छा से उत्पन्न होता है इसलिए पहले आंतरिक परिग्रह का त्याग करना चाहिए। इसके बाद बाह्य परिग्रह स्वतः ही हो जाता है।

अपरिग्रह व्रत के पालन के लिए हमेशा पांच इन्द्रियों के इष्ट–अनिष्ट विषयों के प्रति राग–द्वेष के त्याग का विचार करना चाहिए। इससे आन्तरिक परिग्रह का नाश होगा और फलस्वरूप बाह्य परिग्रह रूकेगा।

अपरिग्रह व्रत अत्यंन्त महिमाकारी है । इससे जीवन में सुख संतोष में वृद्धि होती है। मानव शांति प्राप्त करता है जो वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

–डॉ. धीरज जैन

'वर्तमान में वर्धमान' से साभार

कहानी

ढाल

****

मेरा अनुज 'कमल' ऐसे हैरतअंगेज कारनामे करता था कि मैं विस्मय से ठगा रह जाता।

बचपन में एक बार सिर्फ दो रुपये की शर्त पर मालगाड़ी के नीचे दुबक कर निकल गया। आश्चर्य की बात यह थी कि शर्त तब लगी जब ट्रेन सिटी दे चुकी थी। सर्दी में एक बार अलाव तापते हुए किसी के उकसाने पर अंगारे हाथ में लेकर नचाने लगा, एक अंगारा उछलकर उसके शर्ट की कॉलर में गिर गया, पांच दिन तक अस्पताल में मरहम–पट्टी करवानी पड़ी। जब भी कोई उसे जोखिम भरा कार्य करने को कहता, वह उसे चुनौती की तरह लेता। यही नहीं इन कार्यों को वह पूरे उत्साह से अंजाम देता।

कई बार आगा–पीछा बिल्कुल नहीं सोचता, जोखिम भरे कार्य करना उसकी फितरत थी। बिच्छू का मंत्र न जाने पर सांप की पिटारी में हाथ डाले। उसके कारनामे सुन–सुन कर अम्मा–पापा के रोंगटे खड़े हो जाते। सबको वह आफत की पुड़िया नजर आता। जब भी कोई विपत्ति या पेचीदगी में उलझ जाता, वह मेरे पास आकर खड़ा हो जाता। उसे पूरा विश्वास था, दादा के पास उसकी हर मुसीबत का हल है, दादा के होते हुए उसको कोई तकलीफ आ ही नहीं सकती।

यह मुझमें एक अजीब–सा आश्रय पाता। मुझसे दो जमात नीचे था। जब मैं पांचवी में था, वह तीसरी में। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। स्कूल समाप्त होते ही वह मुझे ढूँढने लगता, कई बार मेरे सहपाठी साथ होते, तो मैं उसे झिड़क भी देता। यह चुपचाप सुन लेता, फिर मुझ से पाँच कदम पीछे चलता रहता। घर आकर मैं अम्मा से शिकायत करता– ''अम्मा यह चिपकू की तरह मेरे पीछे लगा रहता है।'' अम्मा मेरे सर पर स्नेह से हाथ फेरती– ''ठीक ही तो करता है। तूँ इंजन है, यह डब्बा है। तेरी अंगुली पकड़कर नहीं चलेगा तो किसकी पकड़ेगा।'' कमल की आँखें चमक जाती जैसे उसको किसी अभीष्ट कार्य का अनुमोदन हो गया हो।

रात में कई बार न जाने कहां–कहां से भूत–प्रेतों की कहानियाँ सुनकर आता। उसका बिस्तर अलग लगा होता पर जैसे तैसे मुझे मनाकर मेरे बिस्तर में घुस जाता– ''दादा! मुझे आपके साथ नींद अच्छी आती है।'' उसकी मोर–सी मीठी बोली मेरा मन हर लेती। दरअसल मैं खुद भी रातों में बहुत डरता था, पर कमल की नजरों में मैं एक निर्भीक, निडर व्यक्ति था जो भूत–प्रेत के हौसले भी पस्त कर सकता है। उसका भ्रम कई बार मेरे मन में अजीब–सी गुदगुदी पैदा करता, बचपन में ही कहीं मुझे बुजुर्गियत का बोध होने लगता।

सावन के महीने में एक बार हम दोनों स्कूल से आ रहे थे। अम्मा दोनों को अलग–अलग छतरी देती थी। थोड़ी देर चले ही थे कि टपाटप बड़ी–बड़ी बूंदें गिरने लगी मैंने तुरन्त अपनी छतरी खोली व कमल को छतरी खोलने को कहा। आश्चर्य! उसे तो यह बात सूझी ही नहीं, वह तो बस मेरे छाते के नीचे अपनी छतरी बिना खोले ही चलने लगा उसे पूरा विश्वास था, दादा की छतरी के नीचे वह भीग ही नहीं सकता।

एक बार किसी के उकसाने पर मौहल्ले के एक गुण्डे लड़के सोमदत से भिड़ गया दोनों में अच्छी गुत्थुमगुत्था हुई, पर वह तिनखैया सोमदत्त जैसे कसरती शरीर वाले लड़के के आगे कहाँ तक टिकता। सोमदत्त ने उसकी अच्छी धुनाई की। जब बस नहीं चला, तो उसने मेरा अवलंब लिया– ''छोटा देखकर दादागिरी करता है! दम है तो सुनील दादा से लड़कर बता। कच्चे घड़े की तरह फोड़ डालेंगे। दो घूंसों में ही छठी का दूध याद आ जाएगा। एक पटकी देते ही रेत की दीवार की तरह गिरेगा।'' पराजय की खिन्नता ने उसके क्रोध के अंगारे और दहका दिए थे।

''इतनी–सी जान, गज भर की जुबान। डींग मत मार। वह कौन–सा सूरमा है। राग्या का भाई पराग्या। उसे भी ले आ। चटनी नहीं बना दूं, तो सोमदत्त नहीं कहना।'' सोमदत्त आँखें फाड़े चिल्ला रहा था।

''ज्यादा तीसमारखां मत बन। जीभ चलाने की बजाय लड़कर बताना। दादा ने अच्छे–अच्छों के दाँत खट्टे किए हैं। देखते ही निकर उतर जाएगी।''

''जा, जा! उसको भी ले आ। दिन में तारे नहीं दिखा दूं तो कहना।'' वह संसार में किसी की भी बुराई सुन सकता था, पर कोई दादा का नाम नीचा करे यह उसे असह्य था। आँखों के आगे पलकों की बुराई कौन सहेगा। रोते–रोते मेरे पास आया– ''दादा! सोमदत्त ने मुझे बिना मतलब मारा है। मैंने उसे साफ कह दिया हिम्मत हो तो दादा से लड़ो। आप मेरे साथ चलो, अभी धूल चाटता नजर

आएगा।''

लड़ाई के नाम से ही मेरी पिण्डलियाँ कांपने लगी यह अक्लमंद की दुम एक दिन इज्जत धूल में मिलाएगा। कैसा अजीब भाई है, जिसकी गोद में बैठे उसी की दाढ़ी नोंचे। इस अहमक के पेट में भवानी बैठे।

लेकिन यह प्रतिष्ठा एवं आस्था का प्रश्न था। मेरी स्थिति साँप–छछूंदर जैसी थी– ऊगले तो अंधा, निगले तो कोढ़ी। मैंने अपने भीतर के सारे साहस को इकट्ठा किया– ''चल! देखें कौन तुझे हाथ लगा सकता है।'' उसकी आँखें वीरोन्मत्त उत्साह से चमक उठी। अब होगी असली टक्कर। दादा रोज सुबह गिलास भरकर दूध पीते हैं, शाम अखाड़े में वर्जिश करने भी जाते हैं, देखते ही हिलने लगेगा। हो सकता है दादा को देखते ही भाग खड़ा हो। एक अजीब–से उत्साह से वह लम्बे–लम्बे कदम भरने लगा। उसके उत्साह ने मुझे हौसला दिया कुल–प्रतिष्ठा की ध्वजा हाथ में लिये मैंने कूच किया। उसके कंधे पर हाथ रखे मैं ऐसे चलने लगा जैसे वीरसस से पगा कोई रणधीर जा रहा हो। भय की पराकाष्ठा एवं इज्जत की दावेदारी कभी–कभी इंसान को असीम साहस से भर देती है। रगों में तेजी एवं तबीयत में नशा छा जाता है।

सोमदत्त को देखते ही कमल ने उसे ललकारा– ''अब लड़ दम हो तो। बच्चों को कोई भी आँख दिखा सकता है।'' सोमदत्त की भुजाएँ फड़क उठीं। उसका रणकौशल उसके चेहरे पर चमक उठा। पूरे मौहल्ले में उसकी प्रतिष्ठा का प्रश्न था। मुझे देखते ही उसने धमाधम चार घूसें लगाए, फिर टांग में एड देकर वह पटकी दी कि मुझे दिन में ही तारे दिखने लगे। मैं उस वक्त को कोसने लगा जब कमल के उकसाने में आ गया। ये कमबख्त तो कुछ भी मदद नहीं कर रहा। लंगडे–लूले गए बरात दो–दो जूते दो–दो जात वाली हालत थी। वापस उठने के पहले ठाकुरजी से मनौती मांग रहा था– प्रभु! कमल के सामने तो ऐसी दुर्गत मत करवा। मैं इसे क्या मुंह दिखाऊंगा। मैं किसी भी हालत में उसकी आँखों में नहीं गिरना चाहता था। घोड़े का गिरा संभल सकता है, आँख का गिरा नहीं। बिल्ली के भाग्य का छींका टूटा, मेरा सौभाग्य! उसी वक्त सोमदत्त के पिता उधर से निकले, उसे लड़ते देखकर उसे दो तमाचे रसीद किए– ''जब देखो लड़ता रहता है। सिवाय गुण्डागर्दी के कुछ आता है? पिछले तीन साल से एक ही जमात में बैठा है। सोमदत्त के पिता उसे कान पकड़कर घसीट ले गए। अंधा क्या चाहे दो आँखें। प्रभु इसने कृपालु हो सकते हैं, यह मुझे उसी दिन समझ में आया। मैंने तुरन्त मौके का फायदा उठाया, तमक कर बोला– ''आज बाप ने बचा लिया, कल तो इसी मौहल्ले में मिलेगा। आज के बाद कमल के हाथ भी लगाया तो टांग तोड़ दूंगा। कमल का चेहरा गर्व ज्योति से जगमगा रहा था।

बचपन अब मात्र अतीत की स्मृति है। वे दिन हवा हुए। बचपन एक नन्हीं चिड़िया की तरह फुर्र से उड़ गया। कौन जानता था कि कल की उन छोटी–छोटी जोखिमों को जीने वाला कमल शहर का एक प्रमुख उद्योगपति होगा। कॉलेज छोड़ने के बाद मेरी रेलवे में नौकरी लग गई। कमल ने बहुत प्रयास किए पर वह किसी प्रतिस्पर्धी परीक्षा में नहीं निकला। जब भी किसी परीक्षा में असफलता की सूचना मिलती, वह मेरे पास आकर कुछ समय बैठ जाता जैसे मैं ही उसका अवलम्ब हूँ।

हताश उसने टेक्सटाईल प्रिण्टिंग के एक कारखाने में नौकरी की। वही जोखिम लेने की पुरानी आदत उसे पुकारने लगी। ऋण लेकर स्वयं की एक छोटी सी फैक्ट्री खोली, फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

हम दोनों की शादी हुए भी अब बीस वर्ष से ऊपर होने को आए। बच्चे भी बड़े हो गए कमल अब एक धनी–मानी व्यक्ति था, शहर के कई उच्चाधिकारियों से उसके घरेलू सम्बन्ध थे कई लोग उससे कारोबार के सम्बन्ध में राय लेने आते व उसकी सलाह मानकर निहाल हो जाते। वह जब भी विपत्ति में होता, सीधे मेरे घर आ जाता। मेरी हैसियत के हिसाब से मैं उसकी किसी समस्या का समाधान नहीं कर सकता था, पर मात्र मेरी उपस्थिति से ही उसे सुकून एवं सहारा मिल जाता। व्यावसायिक जगत में उसके सटीक निर्णय की सर्वत्र सराहना होती, पर अपनी छोटी से छोटी समस्या को भी वह मुझसे फोन पर 'डिस्कस' करता।

वक्त का रथ सदैव अविरल गति से चलता रहता है इन्हीं दिनों मेरी पोस्टिंग हमारे शहर से तीन सौ किलोमीटर दूर गोपीपुर शहर में स्टेशन मास्टर के पद पर हुई। प्रमोशन के साथ ट्रांसफर था अतः जाना ही था। कमल अपनी पत्नी मालती एवं दोनों बच्चों के साथ मुझे स्टेशन छोड़ने आया। एक अजीब–सी उदासी एवं विषाद उसके चेहरे पर उभर रहा था, जैसे किसी नामी तलवारबाज से उसकी ढाल छिन रही हो। कोई हिरण का बच्चा, मृगी से बिछुड़ रहा हो। अब मेरी उम्र पचास के करीब थी और वह सैंतालीस का। दोनों के आधे से ऊपर बाल सफेद हो चुके थे, फिर भी वह बार–बार मेरे समीप आकर खड़ा हो जाता। मेरा विह्वल मन फूट–फूट कर रोने को करता पर मुझे मालूम था मेरे एक आँसू के बहते ही उसकी आँखों से गंगा–जमुना बह

उठेगी। ट्रेन जब स्टेशन छोड़ने लगी, तो वह तब तक मेरे डब्बे के साथ चलता रहा, जब तक उसके पांवों की गति ने उसका साथ नहीं छोड़ दिया।

स्टेशन मास्टर की भी कोई नौकरी है। रात–दिन जगकर जनता की सेवा करो, पर पब्लिक तो फिर भी खरी–खोटी ही सुनाती है। मैं शहर छोड़कर यहां आ तो गया, पर न तो मेरा मन यहां लगता था न परिवार का। नौकरी की मजबूरी न होती तो कब का छोड़ देता। कमल ने मुझे कहा भी था– ''दादा यहीं कुछ मिलकर काम कर लेंगे अब मुझसे भी कारोबार अकेले नहीं सम्भलता। पर मुझे लगा उसके सहारे कोई भी काम करके मैं मेरा बड़प्पन ही खो दूंगा। माँ–बाबूजी के निधन के बाद तो मैं उसका भगवान ही हो गया था।

चन्द्रमा को भी ग्रहण लगता है। मेरे शहर छोड़ने के बाद से ही जैसे कमल के दिन फिर गए। भरे–पूरे परिवार के बीच वह अजीब–सी उदासी में रहने लगा। घण्टों अकेले बैठा आकाश में किसी को ढूँढता एक अजीब–से अवसाद ने उसे आवृत्त कर लिया। रात घबराकर नींद से उठ जाता, कभी रात को ही गाड़ी लेकर घूमने निकल जाता। कमजोर आश्रयहीन मन में दुर्व्यसन शीघ्र अपना डेरा बना लेते हैं। इन दिनों वह नशा भी करने लग गया था। धीरे–धीरे वह कमजोर होने लगा, एक दिन खून की उलटी हुई तो उसे तुरन्त अस्पताल ले जाया गया। इलाज की कहाँ कमी थी, नामी डॉक्टरों ने प्रयास किया पर वह किसी मेडिसन को 'रिस्पोण्ड' ही नहीं कर रहा था। उसकी आँखें तो अस्पताल की दीवारों, पंखों में कुछ और ही खोजती। हृदय का हृदय से सम्बन्ध होता है, लहू को लहू पुकारता है। कुछ रिश्ते अटूट डोर से बंधे होते हैं।

बांद्रा एक्सप्रेस अभी–अभी गोपीपुर स्टेशन से होकर निकली थी। मैं वापस आकर सीट पर बैठा ही था कि फोन की घण्टी बजी उधर से कमल की पत्नी मालती का फोन था– ''भाई साहब! आप तुरन्त आ जाओ, इनकी तबीयत सीरियस है।'' मेरे हाथ से चोगा छूट गया, पाँव तले जमीन सरक गई। मैंने तुरन्त अपने जूनियर को चार्ज दिया व शहर की राह ली। एक प्राइवेट टैक्सी कर मैं तुरन्त परिवार सहित वापस अपने शहर आया। ड्राइवर को मैंने गाड़ी सीधे अस्पताल ले जाने को कहा ।

अस्पताल कॉरीडोर में मेरे पांव लम्बे–लम्बे डग भर रहे थे इस छोटे से रास्ते में ही मैंने हजारों मनौतियों मांग डाली। ज्यों ही मैं उसके रूम में घुसा सभी अपना स्थान छोड़कर हट गए। कमल मुझे देखते ही एक नई आभा से भर उठा। जैसे अरुणोदय के साथ ही कमल खिल उठते हैं, उसका चेहरा एक नये नूर से दमक उठा। उसकी सारी बीमारी, सारा अवसाद, सारी निराशा क्षण भर में काफूर हो गई। टिमटिमाते दीये को जैसे किसी ने यकायक घी से पुनः भर दिया हो। डॉक्टर, नर्स सभी उसके चेहरे की चमक को देखकर हतप्रभ थे।

उसने मुझे कसकर पकड़ लिया– ''दादा! वादा करो अब मुझे छोड़कर कभी नहीं जाओगे। इस बार गए तो मेरा मरा मुँह ही देखोगे।'' स्नेह की निर्झर धारा मेरी आँखों से फूट पड़ी। शरीर पुलकित हो गया। शरीर में स्नेह समाता नहीं था। दोनों के नेत्रों से बरसते जलबिंदु जैसे अमृत छलका रहे थे।

दूसरे दिन मैंने अपना त्याग–पत्र भेज दिया।

–हरिप्रकाश राठी
(कहानी संग्रह 'अगोचर' से साभार)
सी–136, कमला नेहरू नगर, प्रथम विस्तार, जोधपुर

खो गया समय

खो गया 'समय'
खो गये सब लोग
कुछ समय के 'साथ'
कुछ समय के 'परे'
'ढूंढा' कुछ मिल गये
कुछ का 'सुराग'
'भी' न मिला
'कुछ' निकल गये
'बहुत दूर'
जैसे निकल गया 'समय'
बहुत दूर जो 'मिले'
मिले गले, पूछा 'हालचाल'
खुश हुये, बहुत दिनों 'बाद'
पुनः मिलने पर, बीच का 'समय'
'विलिन' हो गया
खो चुके 'समय' में
ढूंढ रही हूं मैं
खो गया 'समय'

*-**भावना जैन** (अध्यापिका)*
आर.के. कॉलोनी, भीलवाड़ा

अभिनंदन

श्री हिमांशु जैन

(सुपुत्र श्री ओम प्रकाश जैन, एडवोकेट)
'दांतिया हाउस', सी-22, इंद्रपुरी, लाल कोठी, जयपुर

जयपुर नगर निगम (ग्रेटर)
के वार्ड सं. 142 से
पार्षद चुने जाने पर

हार्दिक शुभकामनाऐं
एवं बधाई

शुभेच्छु

अशोक कुमार अंशुमन जैन
2-बी, रामद्वारा कॉलोनी, महावीर नगर, टोंक रोड, जयपुर

mindbox
PACKAGING SOLUTIONS

- ★ Packaging Innovation
- ★ Packaging Design & Development
- ★ New Product Development and Project Management
- ★ Product Life Cycle Management
- ★ Packaging Audit
- ★ Trademark & Patent, Barcode
- ★ Legal Advice
- ★ Artwork Approval
- ★ Specification Development
- ★ Packaging Material Sourcing
- ★ Cost Saving Initiatives via Value Engineering & Continuous Improvement

T-1, 3rd Floor, Trade Centre 11-12, Sahakar Marg, Jaipur-302015 (Raj.) M.: +91 98105 02473
Website : www.mindboxpackaging.com • Email : mindboxpackaging@gmail.com

हार्दिक अभिनंदन...
श्री हिमांशु जैन
(सुपुत्र श्री ओम प्रकाश जैन, एडवोकेट)
'दांतिया हाउस', सी-22, इंद्रपुरी, लाल कोठी, जयपुर
जयपुर नगर निगम (ग्रेटर)
के वार्ड सं. 142 से
पार्षद चुने जाने पर
हार्दिक शुभकामनाऐं
एवं बधाई
शुभेच्छु
RATAN FINANCE
RF
Arun Kumar Jain
(M) 9414840461
Ramesh Chand Palliwal
(M) 9314878320
D-13 B, Govindpuri, Near Hanuman Temple,
Jyotiba Phule College Road, Swez Farm, Jaipur-302019 (Raj.)
Loan on JDA Approved Property & Gold Loan*
IT TAKES MONEY TO MAKE MONEY
* Term & Conditions Apply

श्री चन्द्रप्रभु नमः

ग्यारहवीं पुण्यतिथि पर
भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री मंगतराम जी जैन

(निवासी-मौजपुर)

स्वर्गवास : 22-12-2009

आपके कार्य-परायणता, सच्चाई, परिश्रम एवं धर्म का वास के द्वारा जो आपने उच्च आदर्श स्थापित किए हैं, हम उनको आजीवन निभाने के प्रयासरत रहेंगे। हम आपके आदर्शवादी जीवन को श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
राजेन्द्र कुमार-रतन जैन
दिनेश कुमार-निर्मला जैन
देवेन्द्र कुमार-तारा जैन
अशोक कुमार-मधु जैन
सुधीर कुमार-सुनिता जैन
एवं विजेन्द्र कुमार

धर्मपत्नी :
श्रीमती बर्फी देवी जैन

पुत्री :
श्रीमती विमला जैन
(पत्नी स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन)

पौत्र-पौत्रवधु :
राहुल जैन-समर्पिता
नरेश जैन-तपस्या (नेहा)
दिलीप जैन-पूजा
नितिन जैन-पूनम
सौरभ जैन-रेनू

पड़ पौत्र, पौत्री :
चिरायुष (मन), नलिनी, तेजस्वनी पावनी, अन्नुश्री, दिवीत, सर्वज्ञ, श्रैयाष

निवास :- सी-117 (A) सावित्री पथ, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर
फोन : 9414581512, 9460832227

भावभीनी श्रद्धांजलि

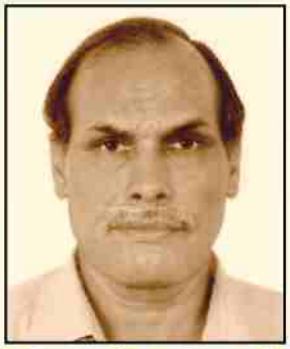

स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन
(सुपुत्र स्व. श्री हरीशचन्द्र जी जैन)
(पुण्यतिथि : 21.5.2017)

स्व. ई. श्री मोहित कुमार जी जैन
(सुपुत्र स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन)
(पुण्यतिथि : 9.8.2018)

हम आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए
भगवान वीर से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती मिथलेश जैन
(धर्मपत्नी)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(पुत्री-दामाद)

श्रीमती मिथलेश जैन
(माँ)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(बहन-बहनोई)

मोहित कुमार जैन ट्रस्ट (पंजि.)

ए/165, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली-110077
दूरभाष : 9599660709, 9599230509

प्रेरक प्रसंग

कोरोना काल में आजकल सभी लोगों के आवागमन पर अप्रत्यक्ष रूप में एक प्रकार से प्रतिबंध सा ही लग गया है। साठ वर्ष से ऊपर के लोगों पर तो यह प्रतिबंध कुछ भारी भरकम तरीके से लागू हो रहा है। इसलिए मैं भी आज कल घर से कम ही निकल पाता हूं। अभी कुछ दिन पहले मैं अपने घर पर बैठा अपनी श्रीमती जी के साथ चाय पी रहा था, समय यही कोई चार सवा चार बजे का होगा, मेरे मोबाइल की घंटी बजी, देखा तो कोई अनजान नम्बर था। मैंने फोन उठाया और हैलो बोला दूसरी ओर से आवाज आई अशोक जी बोल रहे हैं। मैंने कहा ''हां अशोक कुमार जैन बोल रहा हूं।'' दूसरी ओर से जिन महोदय का फोन था उन्होंने बड़ी शालीनता से कहा यदि आप व्यस्त न हो तो मैं आपसे दो–चार मिनट बात करना चाहता हूं। मैंने कहा हां हां बोलिए, उन सज्जन ने अपना परिचय दिया मैं उन सज्जन को बहुत पहले से ही जानता–पहचानता था सो मैंने कहा– भाई साहब आज तो आनन्द आ गया आपकी आवाज बहुत दिनों के बाद सुनी है सो पहचान नहीं पाया था। माफी चाहता हूं।

उन्होंने कहा, नहीं नहीं अशोक जी मुझे आप से कुछ विचार–विमर्श करना है, मैंने कहा– हुक्म करें भाई साहब, वह बोले हुक्म नहीं निवेदन है और मुझसे पूछा कि ''आप आगरा में मास्टर मंगल सैन जी से परिचित हैं क्या? वह धूलियागंज बेगम ढ्योड़ी में रहते थे, आप तो खुद भी धूलियागंज के रहने वाले हो। मैंने कहा– हां हां भाई साहब, मैं उनको खूब जानता–पहचानता हूं, वह मेरे बाबा (दादा) लगते थे। उन्होंने कहा– हां–हां वही, अशोक जी उनका मुझ पर बहुत उपकार और स्नेह रहा है, 1954 में उन्होंने मेरी पढाई–लिखाई में बहुत सहयोग दिया था, मेरी परिस्थिति ऐसी नहीं थी कि मैं आगे की पढ़ाई पूरी कर सकूं, परन्तु पूज्यनीय मास्टर मंगल सैन जी ने मुझे आगे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया बल्कि मेरी आर्थिक रूप से भी बहुत मदद की। आज मैं जो भी हूं वह उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता की वजह से ही हूं। अशोक जी मैं उनकी स्मृति में पल्लीवाज जैन शिक्षा समिति में कुछ करना चाहता हूं, परन्तु मेरी एक शर्त है कि इसमें मेरा नाम कहीं पर भी उजागर नहीं होना चाहिए।

मैंने उत्साहित होकर उनसे पूछ ही लिया कि भाई साहब आप क्या करना चाहते हैं। उन्होनें कहा– मैं स्कूल निर्माण हेतु एक लाख रूपये देना चाहता हूं। मैंने उनसे कहा कि भाई साहब यह तो बहुत अच्छा विचार है, बताएं मैं आपसे चैक लेने कब आ जाऊं। वे बोले– आप जब भी चाहे तब आप मुझसे इस राशि का चेक ले जाएं, मैं केवल आपके पांच मिनट लूंगा।

मुझसे रहा नहीं गया और मैंने माननीय श्री आर.सी. जैन साहब को फोन मिला कर पूरी वार्ता से अवगत कराया। श्री आर.सी. जैन ने मुझसे कहा यदि आप उचित समझे तो मैं आपके साथ चलूं। दूसरे दिन मैं और आर.सी. जैन साहब उन सहृदय महानुभाव के निवास पर गये। उन्होंने हमारा अत्यंत गर्मजोशी से स्वागत किया, हमें ड्राइंग रूप में बैठा कर वे अन्दर गये और चेक बुक और पैन लेकर बाहर आए और पूछा, किस नाम से चेक देना है। आर.सी. जैन साहब ने कहा 'पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति' के नाम चैक काट दें। जब वे चैक भर रहे थे तो मैंने कहा कि भाई साहब आप इस रकम में पांच हजार रू. और बढ़ा दें तो कैसा रहे, हमारी योजना के अनुसार यह पांच गज भूमि की राशि हो जाएगी। वे बोले कोई दिक्कत नहीं है मैं एक लाख पांच हजार रू. का चैक आपको दे देता हूं। उन्होंने तुरन्त एक लाख पांच हजार रू. का चैक हमारे हाथ में थमा दिया। आर.सी. जैन साहब ने रसीद बुक निकाल कर पूछा कि रसीद किस नाम से काटनी है, वह तुरन्त बोले कि रसीद पर लिखें श्री मास्टर मंगल सैन जैन की स्मृति में गुप्त दान। उन्होंने अपने नाम से रसीद कटवाने से मना कर दिया।

मेरे दिल और दिमाग में यह घटना–प्रसंग बार–बार घूमता रहा, मेरा यह सोचना है कि समाज में ऐसे अनेक महानुभाव होंगे जिन्हें संकटकालीन समय में समाज के अनेक महानुभावों ने प्रोत्साहित कर आगे बढ़ने में सहानुभूति पूर्वक सहयोग किया होगा। आज बहुत से बन्धु उसी सहयोग और प्रोत्साहन से अपना सुखी जीवन निर्वाह कर रहे हैं, परन्तु जो सोच–समर्पण और सम्मान का भाव समाज के इन संवेदनशील महानुभाव में देखने को मिला ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है।

'पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति' पल्लीवाल जैन समाज की देश की पहली शिक्षण संस्था है, यह समिति संस्थागत प्रक्रिया के माध्यम से समाज के शैक्षणिक विकास के द्वारा समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कृत संकल्प है। देश भर में फैले पल्लीवाल जैन बन्धुओं को इस संस्था को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने का मन बनाना चाहिए जिससे शिक्षा समिति अपने गन्तव्य की ओर और सक्रियता से काम कर सके।

–अशोक कुमार जैन
मन्त्री, पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति

जादुई चश्मा

एक ब्राह्मण यात्रा करते–करते किसी नगर से गुजरा बड़े–बड़े महल एवं अट्टालिकाओं को देखकर ब्राह्मण भिक्षा माँगने गया किन्तु किसी ने भी उसे दो मुट्ठी अन्न नहीं दिया। आखिर दोपहर हो गयी ब्राह्मण दुःखी होकर अपने भाग्य को कोसता हुआ जा रहा था– ''कैसा मेरा दुर्भाग्य है इतने बड़े नगर में मुझे खाने के लिए दो मुट्ठी अन्न तक न मिला? रोटी बना कर खाने के लिए दो मुट्ठी आटा तक न मिला?

इतने में एक सिद्ध संत की निगाह उस पर पड़ी उन्होंने ब्राह्मण की बड़बड़ाहट सुन ली वे बड़े पहुँचे हुए संत थे उन्होंने कहा– ''ब्राह्मण तुम मनुष्य से भिक्षा माँगो, पशु क्या जानें भिक्षा देना?''

ब्राह्मण दंग रह गया और कहने लगा– ''हे महात्मन् आप क्या कह रहे हैं? बड़ी–बड़ी अट्टालिकाओं में रहने वाले मनुष्यों से ही मैंने भिक्षा माँगी है।''

संत– ''नहीं ब्राह्मण मनुष्य शरीर में दिखने वाले वे लोग भीतर से मनुष्य नहीं हैं अभी भी वे पिछले जन्म के हिसाब से ही जी रहे हैं कोई शेर की योनी से आया है तो कोई कुत्ते की योनी से आया है, कोई हिरण की से आया है तो कोई गाय या भैंस की योनी से आया है। उन की आकृति मानव–शरीर की जरूर है किन्तु अभी तक उन में मनुष्यत्व निखरा नहीं है और जब तक मनुष्यत्व नहीं निखरता, तब तक दूसरे मनुष्य की पीड़ा का पता नहीं चलता। 'दूसरे में भी मेरा ही दिलबर ही है' यह ज्ञान नहीं होता तुम ने मनुष्यों से नहीं, पशुओं से भिक्षा माँगी है।''

ब्राह्मण का चेहरा दुःख रहा था ब्राह्मण का चेहरा इन्कार की खबरें दे रहा था। सिद्ध पुरुष तो दूरदृष्टि के धनी होते हैं। उन्होंने कहा– ''देख ब्राह्मण मैं तुझे यह चश्मा देता हूँ इस चश्मे को पहन कर जा और कोई भी मनुष्य दिखे, उस से भिक्षा माँग फिर देख, क्या होता है।''

ब्राह्मण जहाँ पहले गया था, वहीं पुनः गया। योगसिद्ध कला वाला चश्मा पहनकर गौर से देखा– 'ओहोऽऽऽऽ वाकई कोई कुत्ता है, कोई बिल्ली है तो कोई बघेरा है। आकृति तो मनुष्य की है लेकिन संस्कार पशुओं के हैं, मनुष्य होने पर भी मनुष्यत्व के संस्कार नहीं हैं।' घूमते–घूमते वह ब्राह्मण थोड़ा सा आगे गया तो देखा कि एक मोची जूते सिल रहा है, ब्राह्मण ने उसे गौर से देखा तो उस में मनुष्यत्व का निखार पाया। ब्राह्मण ने उस के पास जाकर कहा– ''भाई तेरा धंधा तो बहुत हल्का है और मैं हूँ ब्राह्मण रीति रिवाज एवं कर्मकाण्ड को बड़ी चुस्ती से पालता हूँ मुझे बड़ी भूख लगी है लेकिन तेरे हाथ का नहीं खाऊँगा फिर भी मैं तुझसे माँगता हूँ क्योंकि मुझे तुझमें मनुष्यत्व दिखा है।''

उस मोची की आँखों से टप–टप आँसू बरसने लगे वह बोला– ''हे प्रभु आप भूखे हैं? हे मेरे रब आप भूखे हैं? इतनी देर आप कहाँ थे?''

यह कहकर मोची उठा एवं जूते सिलकर टका, आना–दो आना वगैरह जो इकट्ठे किये थे, उस चिल्लर (रेज़गारी) को लेकर हलवाई की दुकान पर पहुँचा और बोला– ''हे हलवाई मेरे इन भूखे भगवान की सेवा कर लो ये चिल्लर यहाँ रखता हूँ जो कुछ भी सब्जी–पराँठे–पूरी आदि दे सकते हो, वह इन्हें दे दो मैं अभी जाता हूँ।''

यह कहकर मोची भागा घर जाकर अपने हाथ से बनाई हुई एक जोड़ी जूती ले आया एवं चौराहे पर उसे बेचने के लिए खड़ा हो गया।

उस राज्य का राजा जूतियों का बड़ा शौकीन था उस दिन भी उस ने कई तरह की जूतियाँ पहनीं किंतु किसी की बनावट उसे पसंद नहीं आयी तो किसी का नाप नहीं आया दो–पाँच बार प्रयत्न करने पर भी राजा को कोई पसंद नहीं आयी तो मंत्री से क्रुद्ध होकर बोला– ''अगर इस बार ढंग की जूती लाया तो जूती वाले को इनाम दूँगा और ठीक नहीं लाया तो मंत्री के बच्चे तेरी खबर ले लूँगा।''

दैव योग से मंत्री की नज़र इस मोची के रूप में खड़े असली मानव पर पड़ गयी जिस में मानवता खिली थी, जिस की आँखों में कुछ प्रेम के भाव थे, चित्त में दया–करूणा थी, ब्राह्मण के संग का थोड़ा रंग लगा था। मंत्री ने मोची से जूती ले ली एवं राजा के पास ले गया राजा को वह जूती एकदम 'फिट' आ गयी, मानो वह जूती राजा के नाप की ही बनी थी राजा ने कहा– ''ऐसी जूती तो मैंने पहली बार ही पहन रहा हूँ किस मोची ने बनाई है यह जूती?''

मंत्री बोला ''हुजूर यह मोची बाहर ही खड़ा है।''

मोची को बुलाया गया उस को देखकर राजा की भी मानवता थोड़ी खिली राजा ने कहा– ''जूती के तो पाँच रूपये होते हैं किन्तु यह पाँच रूपयों वाली नहीं, पाँच सौ

रूपयों वाली जूती है जूती बनाने वाले को पाँच सौ और जूती के पाँच सौ, कुल एक हजार रूपये इसको दे दो।''

मोची बोला– ''राजा साहिब तनिक ठहरिये यह जूती मेरी नहीं है, जिसकी है उसे मैं अभी ले आता हूँ।''

मोची जाकर विनयपूर्वक ब्राह्मण को राजा के पास ले आया एवं राजा से बोला– ''राजा साहब यह जूती इन्हीं की है।''

राजा को आश्चर्य हुआ वह बोला– ''यह तो ब्राह्मण है इस की जूती कैसे ?''

राजा ने ब्राह्मण से पूछा तो ब्राह्मण ने कहा मैं तो ब्राह्मण हूँ यात्रा करने निकला हूँ।''

राजा– ''मोची जूती तो तुम बेच रहे थे इस ब्राह्मण ने जूती कब खरीदी और बेची ?''

मोची ने कहा– ''राजन् मैंने मन में ही संकल्प कर लिया था कि जूती की जो रकम आयेगी वह इन ब्राह्मणदेव की होगी जब रकम इनकी है तो मैं इन रूपयों को कैसे ले सकता हूँ ? इसीलिए मैं इन्हें ले आया हूँ न जाने किसी जन्म में मैंने दान करने का संकल्प किया होगा और मुकर गया होऊँगा तभी तो यह मोची का चोला मिला है अब भी यदि मुकर जाऊँ तो तो न जाने मेरी कैसी दुर्गति हो ? इसीलिए राजन् ये रूपये मेरे नहीं हुए, मेरे मन में आ गया था कि इस जूती की रकम इनके लिए होगी फिर पाँच रूपये मिलते तो भी इनके होते और एक हजार मिल रहे हैं तो भी इनके ही हैं। हो सकता है मेरा मन बेईमान हो जाता इसीलिए मैंने रूपयों को नहीं छुआ और असली अधिकारी को ले आया।''

राजा ने आश्चर्य चकित होकर ब्राह्मण से पूछा– ''ब्राह्मण मोची से तुम्हारा परिचय कैसे हुआ ?''

ब्राह्मण ने सारी आप बीती सुनाते हुए सिद्ध पुरुष के चश्मे वाली आप के राज्य में पशुओं के दीदार तो बहुत हुए लेकिन मनुष्यत्व का विकास इस मोची में ही नज़र आया।''

राजा ने कौतूहलवश कहा– ''लाओ, वह चश्मा जरा हम भी देखें।''

राजा ने चश्मा लगाकर देखा तो दरबारी वगैरह में उसे भी कोई सियार दिखा तो कोई हिरण, कोई बंदर दिखा तो कोई रीछ। राजा दंग रह गया कि यह तो पशुओं का दरबार भरा पड़ा है। उसने सोचा कि ये सब पशु हैं तो मैं कौन हूँ ? उस ने आईना मँगवाया एवं उसमें अपना चेहरा देखा तो शेर। उस के आश्चर्य की सीमा न रही 'ये सारे जंगल के प्राणी और मैं जंगल का राजा शेर यहाँ भी इनका राजा बना बैठा हूँ।' राजा ने कहा– ''ब्राह्मणदेव योगी महाराज का यह चश्मा तो बड़ा गज़ब का है वे योगी महाराज कहाँ होंगे ?''

ब्राह्मण– ''वे तो कहीं चले गये ऐसे महापुरुष कभी–कभी ही और बड़ी कठिनाई से मिलते हैं।''

श्रद्धावान ही ऐसे महापुरुषों से लाभ उठा पाते हैं, बाकी तो जो मनुष्य के चोले में पशु के समान हैं वे महापुरुष के निकट रहकर भी अपनी पशुता नहीं छोड़ पाते।

ब्राह्मण ने आगे कहा– 'राजन् अब तो बिना चश्मे के भी मनुष्यत्व को परखा जा सकता है व्यक्ति के व्यवहार को देखकर ही पता चल सकता है कि वह किस योनि से आया है एक मेहनत करे और दूसरा उस पर हक जताये तो समझ लो कि वह सर्प योनि से आया है क्योंकि बिल खोदने की मेहनत तो चूहा करता है लेकिन सर्प उस को मारकर बिल पर अपना अधिकार जमा बैठता है।''

अब इस चश्मे के बिना भी विवेक का चश्मा काम कर सकता है और दूसरे को देखें उसकी अपेक्षा स्वयं को ही देखें कि हम सर्पयोनि से आये हैं कि शेर की योनि से आये हैं या सचमुच में हम में मनुष्यता खिली है ? यदि पशुता बाकी है तो वह भी मनुष्यता में बदल सकती है कैसे ?

तुलसीदाज जी ने कहा है–

बिगड़ी जनम अनेक की सुधरे अब और आजु
तुलसी होई राम को रामभजि तजि कुसमाजु

कुसंस्कारों को छोड़ दें, बस अपने कुसंस्कार आप निकालेंगे तो ही निकलेंगे अपने भीतर छिपे हुए पशुत्व को आप निकालेंगे तो ही निकलेगा यह भी तब संभव होगा जब आप अपने समय की कीमत समझेंगे मनुष्यत्व आये तो एक–एक पल को सार्थक किये बिना आप चुप नहीं बैठेंगे पशु अपना समय ऐसे ही गँवाता है पशुत्व के संस्कार पड़े रहेंगे तो आपका समय बिगड़ेगा अतः पशुत्व के संस्कारों को आप निकालिये एवं मनुष्यत्व के संस्कारों को उभारिये फिर सिद्धपुरुष का चश्मा नहीं, वरन् अपने विवेक का चश्मा ही कार्य करेगा और इस विवेक के चश्मे को पाने की युक्ति मिलती है सत्संग से।

मानवता से जो पूर्ण हो, वही मनुष्य कहलाता है।

बिन मानवता के मानव भी, पशुतुल्य रह जाता है।और वर्तमान में भी इस संसार में रहते। जिनके कार्यों से आप स्वम भी परमात्मा के द्वारा दी गई मनुष्य योनि का सद उपयोग करते हुए पहचान कर सकते हैं ।

संकलन : चन्द्रशेखर जैन

महासभा सदस्यता

1. **श्री देव भूषण जैन** पुत्र श्री विनय कुमार जैन, डब्ल्यू जेड–437, पालम गांव, नई दिल्ली–110045 *(र.सं. 4858)*
2. **श्रीमती बबली जैन** पत्नी श्री देव भूषण जैन, डब्ल्यू जेड–437, पालम गांव, नई दिल्ली–110045 *(र.सं. 4859)*
3. **श्री मुकेश जैन** पुत्र श्री महिन्द्र कुमार जैन, 25, फ्रेण्ड्स कॉलोनी, आर.आर. कॉलेज के पास, अलवर *(र.सं. 4860)*
4. **श्रीमती रितु जैन** पत्नी श्री मुकेश जैन, 25, फ्रेण्ड्स कॉलोनी, आर.आर. कॉलेज के पास, अलवर *(र.सं. 4861)*

विधवा सहायता

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन, पंकज जैन**, 12, रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली–110045 ने विधवा सहायता हेतु रु. 11000/– भेंट किये। *(र.सं. 4862)*

पत्रिका सहायता

★ **श्रीमती कुसुम ओरडिया जी एवं श्री अशोक कुमार जी ओरडिया** (भीलवाड़ा वालों) ने अपने सुपुत्र चिरंजीव विवेक ओरडिया संग सौ.का. करिश्मा जैन (सुपुत्री श्रीमती शशि जैन एवं श्री विजेंद्र कुमार जैन, नौगांवा वाले) वाशी, नवी मुंबई के दिनांक 1.11.2020 को शुभ विवाह संपन्न होने के उपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. डी–2405)*

★ **श्रीमती माया देवी जी जैन** (वी.एच.एल.) 114, विवेकानन्द नगर, यू.आई.टी. स्कीम, कोटा ने अपने पूज्य पति श्री स्वरूप चन्द जी जैन की दिनांक 17.10.2020 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में रु. 1100/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. डी–2404)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन,** बी–68, बुद्ध विहार, अलवर ने अपने सुपुत्र स्व. श्री गौरव जी जैन की दिनांक 07.11.2020 को प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में रु. 1100/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. डी–2374)*

पत्रिका सदस्यता

3080. **Sh. Manish Kumar Ji Jain,** B-290, Zinc Nagar, Near Kapasan Chauraha, Chittorgarh-312001 (Raj.), Mob.: 9461391413 *(CR D-2394)*

3081. **Sh. Ashok Ji Jain,** 658, Mahaveer Nagar First, Near Ayyappa Temple, Gopalpura Bypass, Jaipur-302018 (Raj.) *(CR D-2402)*

3082. **Seema Ji Jain,** G-2, Ganpati Tower, Bypass Road, Agra-282005 (U.P.), Mob.: 9756748614 *(CR D-2403)*

3083. **Sh. Shikhar Chand Ji Jain,** C/o Shri Jin Kushal Suri Dadawadi, Post Malpura, Dist. Tonk-304502 (Raj.), Mob.: 9251532664 *(CR D-2406)*

बधाई

मूलतः राजस्थान की **प्रीशा जैन** ने हाल ही 'फॉयल यंग पोएट्स ऑफ द ईयर' का इंटरनेशनल अवॉर्ड जीत कर समस्त जैन समाज का नाम रोशन किया है। उन्होंने अपनी नानी पर कविता लिखी थी। प्रीशा यूके के एस्सेक्स में रह रही हैं और उन्होंने जयपुर निवासी अपनी नानी मृदुला पालीवाल की खूबसूरत छवि को शब्दों में पिरोया है। साथ ही परनानी अंगूरी जैन को ट्रिब्यूट भी दिया है। उनकी इस कविता को 118 देशों से आई करीब 16 हजार कविताओं में से चुना गया है। फाइनल 15 कविताएं चुनी हैं, इस कॉम्पीटिशन में छह हजार 791 यंग पोएट्स ने भाग लिया था। 17 वर्षीय प्रीशा की यह कविता द पोएट्री सोसायटी यूके के यूट्यूब चैनल पर सुनी जा सकती है।

श्रीमती सुनीता जैन व्याख्याता रा.उ.मा. विद्यालय डहरा (कुम्हेर) भरतपुर को शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार द्वारा कक्षा 9–12 वर्ग में 'उत्कृष्ट शिक्षक जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान' से राजीव गांधी सेवा केन्द्र कलेक्ट्रेट भरतपुर में दिनांक 15.10.2020 को वर्चुअल शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित कर सम्मानित किया गया। माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा, चिकित्सा राज्यमंत्री श्री सुभाष गर्ग, शिक्षा निदेशक श्री सौरभ स्वामी ने संबोधित किया। श्रीमान जिला कलेक्टर भरतपुर एवं जिले के प्रमुख शिक्षाधिकारीगण द्वारा श्रीमती सुनीता जैन को शॉल, माला, प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीक चिन्ह द्वारा सम्मानित किया गया।

अ.भा.प. जैन महासभा दोनों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाऐं प्रेषित करती है।

हार्दिक शुभकामनाएं

श्री हिमांशु जैन

(सुपुत्र श्री ओम प्रकाश जैन, एडवोकेट)

'दांतिया हाउस', सी-22, इंद्रपुरी, लाल कोठी, जयपुर

जयपुर नगर निगम (ग्रेटर)
के वार्ड सं. 142 से
पार्षद चुने जाने पर

हार्दिक शुभकामनाऐं
एवं बधाई

शुभेच्छु

प्रो. डॉ. ताराचंद जैन
(अध्यक्ष)
पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति
मोबाइल : 9929769939

अशोक कुमार जैन
(मंत्री)
पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति
मोबाइल : 9414047684

अनिल कुमार जैन *(BSNL)*
(कोषाध्यक्ष)
पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति
मोबाइल : 9414001041

"फायल यंग पोएट्स ऑफ द ईयर 2020" इंटरनेशनल अवार्ड प्राप्त करने पर

प्रीशा जैन को

(सुपौत्री स्व. श्री मदनलाल जी एवं स्व. श्रीमती सरला जी जैन)

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

प्रीशा जैन की कविता *My Grandmother* की प्रेरणा

परनानी स्व. श्रीमती अंगूरी जी जैन व नानी श्रीमती मृदुला जी पालीवाल हैं। उनकी छवि को ब्रिटिश संदर्भ में बड़े खूबसूरत शब्दों में पिरोया है। यह कविता 118 देशों से आयीं 16,000 कविताओं में चयनित 15 रचनाओं में एक है। प्रीशा का साक्षात्कार बी.बी.सी. रेडियो द्वारा भी लिया गया है। साक्षात्कार व कविता को यू-ट्यूब पर link- Preesha Jain BBC Interview/ Preesha Jain Poetry पर सुना जा सकता है।

शुभेच्छु

नाना-नानी :
शिव कुमार-प्रमिला पालीवाल
अशोक-मृदुला पालीवाल

मौसी-मौसाजी :
चारू-दीपक जैन

मामा-मामी :
डॉ. धीरेन-सुरभि पालीवाल

भाई, बहन :
सिद्धन्त, खुशी,
नभ, धरा

माता-पिता :
रानू-नीरज जैन
(यू.के.)

भाई :
अरहन जैन

ताऊ-ताई :
महेन्द्र-लता जैन
बसन्त-हिमानी जैन
मुकेश-निशा जैन
मनीष-अम्बिका जैन

चाची :
सुषमा जैन (पत्नी स्व. धीरज जैन)

भाई-भाभी, भतीजा :
सागर-आरूषी, देवम

बहन-जीजाजी :
शारूल-अपूर्व

भाई, बहन :
शुभम, सिद्धार्थ, क्षितिज,
यशोवर्धन, मिमांशा, अनुप्रेक्षा

शिव प्रेम चैरिटेबल ट्रस्ट

निवास : 93/55, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर, मो.: 9414045880

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

विमल चन्द जैन (रेता वाले)

ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9899823557 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers
★ Santosh Mineral & Chemical Co.
★ S.B. Jain Mineral Enterprises
★ Super Fine Mineral Traders
★ Shree Vimal Silica Traders
★ Quality Silica Traders

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क : 098372-53305
090128-74922
05612-260096

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

हमारे पूजनीय साहजी साहब

स्व. श्री नन्द किशोर जी जैन

(भूतपूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा, शाखा जयपुर)

के दिनांक 13 अक्टूबर 2020 को
आकस्मिक देवलोक गमन पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए
वीर प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें।

श्रद्धावनत

मोहनलाल जैन
आदेश जैन-अमिता जैन
(नूतन)
अमरीश जैन-मन्जू जैन
आदित्य जैन-विशाखा जैन
हनी जैन
ऋषभ जैन
आयुषी जैन

महेश चन्द जैन
सुनीता जैन
दिपांशु-प्रीति जैन

प्रतिष्ठान :
नूतन एण्ड कम्पनी
मोहन एण्ड संस
आगरा

आदेश जैन
नारायण टॉवर, फ्लेट नं. 405, संजय पैलेस, आगरा-28002

पंचम पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री विमल चन्द जी जैन

(प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय - से.नि., आगरा निवासी)

(जन्म : 06.09.1939 - स्वर्गवास : 25.11.2015)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना, धर्म के प्रति आस्था एवं प्रेरणादायक चरित्र हमारी स्मृति में सदा रहेगा एवं सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा। हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती संतोष जैन *(पत्नी)*

पुत्र-पुत्रवधु :
डॉ. पवन कुमार जैन-भारती जैन
कमल जैन-वर्षा जैन
पंकज जैन-दिव्या जैन

पौत्र, पौत्री :
आयुषी, दिव्यांश, हिमांशु,
कार्तिक, आन्या

पुत्री-दामाद :
सीमा जैन-अरूण जैन
अनिता जैन-राजेश सेठ
डिम्पल जैन-रवीश जैन

धेवते, धेवती :
आकांक्षा-नमन,
स्वपनिका, करण,
कुनाल, सूर्यांश, शौर्य

समस्त सलावदिया परिवार

निवास : 8-9-152, धातु नगर, कंचनबाग, हैदराबाद
मोबाईल : 9849446456, 9849302009, 9810204976

CARGOMEN LOGISTIC (INDIA) PVT LTD, HYDERABAD
TMEN SYSTEMS PVT. LTD., NOIDA

43वीं पुण्य तिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री लोकेश चन्द जी जैन, *भरतपुर*

(महाप्रयाण : 11 नवम्बर 1977)

43 वर्ष पूर्व हमारे परमपूज्य धर्मपरायण एवं यशस्वी पिताजी
श्री लोकेश चन्द जैन

हमारे लिए अमिट प्रेरणा और महान आदर्श का मार्ग प्रशस्त कर स्वयं सदैव के लिए अमर हो गये। उनकी चिर स्मृति में हम उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पत्नी : त्रिलोकमती जैन

पुत्र-पुत्रवधू :

अनिल कुमार जैन (I.R.S.)
(रिटा. प्रिन्सिपल कमिश्नर इन्कमटैक्स)
स्वाति जैन

अरविन्द कुमार जैन (S.E. PWD)
कीर्ति जैन (R.Ac.S.)

पुत्री-दामाद :

मधु जैन - मुकेश जैन
सुधा जैन - नलिन जैन

पौत्र, पौत्री :

दिव्या-दिप्तर, निकेत-सृष्टि,
भुवन जैन, नेहन जैन

निवास : ई-160-161, रामपथ, श्याम नगर, जयपुर-302019
मोबाईल : 9829234340, 9414071750

66वां जन्म दिवस मुबारक!

(15 नवंबर 2020)

श्री विनोद कुमार जैन

(महामंत्री, श्री दिगम्बर जैन महासभा पश्चिमी दिल्ली)

(केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य, अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा)

एवं प्रमुख समाजसेवी

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका परिवार,

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

एवं सान्ध्य महालक्ष्मी परिवार की ओर से

जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

हार्दिक शुभकामनाएं

श्री हिमांशु जैन

(सुपुत्र श्री ओम प्रकाश जैन, एडवोकेट)

'दांतिया हाउस', सी-22, इंद्रपुरी, लाल कोठी, जयपुर

जयपुर नगर निगम (ग्रेटर)
के वार्ड सं. 142 से
पार्षद चुने जाने पर

हार्दिक शुभकामनाएं
एवं बधाई

शुभेच्छु

आर.सी. जैन *(रिटा. आई.ए.एस.)*

राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर (राज.)
मोबाईल : 9414279070, 9829999335

शोक संवेदना

श्रीमती दौलत रानी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री फूलचंद जी पल्लीवाल, अजमेर का दिनांक 19.11.2020 को 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। अपने अंतिम समय में भी वे पूर्णतः सजग थीं। उनका जन्म दि. 21.10.1934 को कानपुर में श्री दुर्गा प्रसाद जी जैन (बरारा, आगरा वाले) जो कि रिज़र्व बैंक में कार्यरत थे, के यहाँ हुआ था। बचपन में ही उनके माता–पिता व भाई का निधन हो जाने से वे अपनी बड़ी बहन श्रीमती लक्ष्मीदेवी जैन (पत्नी श्री लक्ष्मीचंद जी जैन, इन्जीनियर) के यहां आगरा में रहीं, उन्होंने इनका लालन–पालन अपनी पुत्री की भाँति किया तथा 21 वर्ष की आयु में विवाह कर दिया। उस समय वे केवल इंटर पास थीं। विवाह के पश्चात उनके ससुर श्री मुन्नालाल जी पल्लीवाल ने उनको आगे पढ़ने के लिए प्रेरित किया। परिवार की सभी जिम्मेदारियों का पूर्ण निर्वाह करते हुए उन्होंने बी.ए., बी.एड. किया तथा स्कूल में अध्यापिका हो गयीं। उसके बाद एम.ए., एम.एड. की डिग्री प्राप्त कर गांधी शिक्षक महाविद्यालय गुलाबपुरा की प्राचार्या के पद से 1992 में सेवा निवृत्त हुईं।

श्रीमती दौलत रानी जैन का जीवन बचपन से ही कठिनाइयों से जूझते हुए गुज़रा। लेकिन अपनी जुझारू प्रवृत्ति तथा अदम्य साहस से उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी तीन पुत्रियों तथा एक पुत्र को उच्चतम शिक्षा प्रदान की। अपनी विरासत में वे एक पुत्र श्री सुधीर कुमार जैन (सी.ए.), एवं पुत्रवधू डॉ. कामिनी जैन, पौत्र सिद्धांत जैन, पौत्रवधु श्रेया जैन, पौत्री संस्कृति जैन को छोड़ गयी हैं। उनकी दो पुत्रियां नीरजा एवं नीलिमा (एम.एस.सी., बी.एड.) तथा शानू (सी.ए.) अपने वैवाहिक जीवन में सुखी एवं सम्पन्न हैं।

श्रीमती दौलत रानी ने अपनी लगन तथा कठिन परिश्रम से शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनायी। उनमें एक कुशल गृहणी के गुण कूट–कूट कर भरे हुए थे, जिसने उनके बच्चों को अपने–अपने क्षेत्र में नयी ऊंचाइयां छूने के लिए प्रेरित किया।

सन् 1992 में रिटायर होने के पश्चात उन्होंने आचार्य श्री ज्ञानसागर जी के सानिध्य व प्रेरणा से जैन धर्म का विशेष अध्यन तथा लेखन प्रारम्भ कर दिया था। तत्पश्चात उन्होंने श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका में कई उत्कृष्ट सामाजिक एवं धार्मिक आलेखों का लेखन किया। उनके निधन से पूरे जैन समाज ने एक अनुकरणीय व्यक्तित्व को खो दिया है।

श्रीमती किरण जी जैन धर्मपत्नी श्री सुमति चन्द जैन निवासी खोह, जिला अलवर का दिनांक 6.11.20 को जयपुर में आकस्मिक निधन हो गया। श्रीमती किरण जैन का जन्म दि. 25.10.1950 को करौली निवासी श्री प्यारेलाल जी जैन दिवान के यहां हुआ था। श्रीमती किरण जैन सरल एवं शान्त स्वभाव की धर्मनिष्ठ सुश्राविका थी। आप प्रतिदिन 2 सामायिक करतीं थी। जब आप स्वस्थ थीं तब चतुर्मास में बेले, तेले व अंठाई तप की तपस्या कई बार कर चुकीं हैं। आपके देहावसान से श्री श्राविका मंडल खोह (अलवर) को अपूरणीय क्षति हुई है।

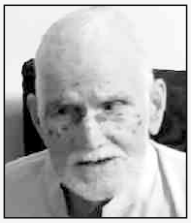

श्री पदम चंद जैन (समाजसेवी एवं शिक्षक नेता) का स्वर्गवास 15 अक्टूबर 2020 को 92 वर्ष की आयु में हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में शिक्षकों की समस्याओं के लिए संघर्ष किया। वह वरिष्ठ पत्रकार स्व. सुरेश चंद जैन चंचल के चाचाजी एवं आगरा नगर निगम की पार्षद सुषमा जैन के ददिया ससुर थे।

श्री रमेश चंद जी जैन 63, इन्द्रा कॉलोनी, भोगीपुरा, शाहगंज, आगरा का स्वर्गवास 5 नवमबर 2020 को हो गया है। आप सरल स्वभाव, मिलनसार, धार्मिक, मृदुभाषी एवं सदैव परमार्थ में लीन तपस्वी की तरह उच्च विचार वाले अच्छे व्यक्तित्व के धनी थे।

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा भगवान महावीर स्वामी से उपरोक्त आत्माओं की सद्गति की प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

संकलन

- ज्ञान सत्वगुण है, रागद्वेष रजोगुण है और अज्ञान तमोगुण है।
- यह बोध कि तुम अज्ञानी हो, ज्ञान की ओर एक बड़ा पग है।
- इस संसार में सबसे आसान काम है दूसरों को देखना और सबसे कठिन काम है स्वयं को देखना।
- सज्जन अपने चरित्र से ही विभूषित होते हैं।
- जैन दर्शन का कर्मवाद पुरुषार्थ प्रेरक है तथा भारतीय दर्शन की आधारशिला है।
- जैन दर्शन जीवन जीने की एक अद्‌भुत पद्धति है। एक जीवन शैली है। संयम व नियम पूर्वक जीवन जीने वाला एवं अहिंसा पर विश्वास रखने वाला हर व्यक्ति जिसका मन निर्मल हो व आचरण पवित्र हो, वह जैन है। जैन दर्शन सर्वाधिक सुविचारित श्रृंखला और जीने की कला है।
- कला बहेतर जगत में, जा में दो सिरदार।
  एक जीव की जीविका, एक जीव उद्धार॥
- समस्त कलाओं में धर्मकला ही श्रेष्ठ है क्योंकि वह जीवन जीने की कला सिखाती है और आत्मा के दर्शन कराती है।
- अपने किए हुए शुभ–अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है।
- धर्म का भूषण वैराग्य है वैभव नहीं।
- **जियो और जीने दो–** भगवान तीर्थंकर देव ने कहा है कि आप सभी सुख–शांति पूर्वक जीवन व्यतीत करें एवं विश्व के समस्त प्राणियों को भी सुख–शांति के साथ जीने दें, उनकी जीवन यात्रा में बाधक न बनें। जैन धर्म 'अहिंसा परमो धर्म' के नाम से विख्यात है।

*–**आर.सी. जैन** (रिटायर्ड बैंक मैनेजर)*
अमर उजाला के पीछे, सिकंदरा, आगरा

सबसे बड़ा गुरु

मेरे में एक बहुत ही छोटी सी समस्या है, मैं कभी भी स्वयं की निंदा सुन नहीं पाता। सदैव भयभीत रहता हूं कि लोग कहीं मेरे विषय में बुरा ना सोचें और यदि पता लग जाऐ कि मेरे पीछे बुराई कर रहे हैं तो दुखी हो जाता हूं, फिर सोचता हूं क्या इस कारण से स्वयं को दुखी कर लेना उचित है?

मेरे गुरु ने कहा है– कदापि नहीं, क्योंकि सबसे पहले इस बात को स्मरण रखना है यदि कोई पीछे आपकी बुराई करता है तो वह हमसे दो कदम पीछे है, है ना?

जो हमारे बारे में सारी बातें कर सकता है, यदि ऐसा नहीं है यदि वह सत्य कह रहा है तो सर्वप्रथम, भूलो को समझें, उस सत्य को समझें, उस सत्य को निकाल फेंके, इन अवगुणों की ओर देखें। हम उनसे दो कदम और आगे बढ़ जाएंगे। क्योंकि यह जीवन रथ आगे देख कर चलाया जाता है, पीछे देखे कर नहीं, तो पीछे देखना छोड़ दीजिए। यही हमारा लक्ष्य है।

मनुष्य जो गलतियों का पुतला है यह सत्य है, भूल भला किससे नहीं होती? हर एक से होती है और एक नहीं अनेक भूलें होती हैं। वस्त्रों पर कीचड़ लगता है तो कीचड़ को साफ करने का प्रयास करते हैं। जहां प्रयास है वहां भूलें हैं। हम कोई बड़ा कार्य करने जा रहे हैं और हमसे भूल हो जाए, गुरु जी कहते हैं– तो कोई बात नहीं, पश्चताप ना करें। अपनी भूल को पहचानें उसे समझें, उसे सुधारने का प्रयास करें। उन्हीं के हाथों से लहू बहता है जो कांटों में छिपे उस पुष्प को निकालने का प्रयास करते हैं। याद रखिऐ जिसने जीवन में कभी कोई भूल नहीं की उसने कभी कोई नया करने का प्रयास ही नहीं किया। ये भूल हमारा बड़ा गुरु है। इससे दुखी ना हो, पश्चाताप ना करें, इस भूल का आदर करना चाहिए, फिर देखें हम स्वयं को जीवन में और ऊंचा पाएंगे।

–विनोद कुमार जैन
दिल्ली

सप्तम् पुण्यतिथि पर श्रृद्धासुमन

स्व. आषीश जैन

जन्म दिनांक : 25.02.1976 - स्वर्गवास : 16.11.2013

'जिस प्रकार फूल बिना बगिया सूनी
तुम्हारे बिना घर सूना
घर का हर कोना तुम्हारी याद दिला कर
आँखों में नमी पैदा कर जाता''

हम सभी परिवार जन आपको शत शत स्मरण करते हुए अश्रुपुरित श्रृद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

आपकी बेटी

आशिता जैन **अनिका जैन**

माता-पिता :
सुमन जैन-सतीश जैन
मो.: 9911590226, 9871116454

चाचा-चाची :
त्रिलोक जैन-राजेश्वरी जैन

छोटा भाई-भाभी :
आलोक जैन-सरगम जैन
मो.: 9818342405, 989924598
अवनी, प्रज्ञा

(CR D-2396)

षष्टम् पुण्यतिथि पर शत्-शत् नमन

"दिन बीते, महीने बीते, बीत गये पांच वर्ष
कोई ऐसा पल नहीं था जब हमें न आया हो आपका ख्याल"

स्व. श्री जगदीश चन्द जैन एवं स्व. श्रीमती प्रमिला जैन

(स्वर्गवास : 16 नवम्बर 2014)

आपके विचार एवं आपके द्वारा दिए गए संस्कारों से ओत-प्रोत इस जीवन में आपकी स्मृति सदैव हृदय में अंकित रहेगी। आपकी पंचम पुण्यतिथि पर हम सभी परिवारी जन अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।
आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना एवं धर्मपरायणता हमारा सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधू :
अनुज जैन-शिवानी जैन
पौत्र, पौत्री :
आशमन जैन,
अनुशी जैन

भ्रातागण :
स्व. श्री अनूपचन्द जैन (आगरा)
स्व. श्री निर्मलचन्द जैन (सीकर)
श्री प्रमोद कुमार जैन (भरतपुर)
श्री विनोद कुमार जैन
बहन-बहनोई :
शान्ति जैन-ओम प्रकाश जैन

पुत्री-दामाद :
शिवानी जैन-विवेक जैन
श्वेता जैन-नीरज जैन
दोहते :
अंतस, अंश,
अरहन, आरनव

निवास :- बी-80, ट्रान्स यमुना कॉलोनी, रामबाग, आगरा
एम-401, एस.पी.एस. हाइट्स, इन्दिरापुरम, गाजियाबाद
मो.: 9971663206, 9650490510

QUALITY WORKS • PROMPT SERVICE • COMPETITIVE RATES

PRODUCTS :
Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers, Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures, RSJ Poles & GI Earthing Strips.

FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT

Fabrication & Galvanizing done as per IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards
Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)
Plant Capacity : 18000 Tons / Year

Vijay Transmission PVT. LTD.

Plant :
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

Corporate Office :
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

46वीं पुण्यतिथि पर शत्-शत् नमन

स्व. श्री चिम्मनलाल जैन

मुबारिकपुर वाले

(समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता)

स्वर्गवास : 11.11.1974

आपने अपने अथक परिश्रम, त्याग, धर्मनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता व सत्य आदर्शवाद से जो उच्च आदर्श स्थापित किये थे, हम उन्हें सर्वेस्य स्त्रोत मानकर आजीवन निभायेंगे। हम आपके आदर्शवादी जीवन को श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
राजेन्द्र-मिथलेश
बिजेन्द्र-बीना
देवेन्द्र-मन्जू
राजेश-संतोष

भ्राता :
भगवान सहाय जैन
महावीर प्रसाद जैन

पुत्री-दामाद :
श्रीमती ऊषा
आशा-अशोक कुमार

पौत्र-पौत्रवधु :
रूपेश-रजनी, विकास-सुनीता
गौरव-पूजा, मोहित-मनीषा
नितिश-दीपाशा, मनीष-बिन्दिया
गौतम

प्रपौत्र, प्रपौत्री :
सिद्धान्त, अरिहन्त, रिद्धी
सिद्धी, वैष्णवी, यश,
अदिश्री

पौत्री-पौत्री दामाद :
मुकेश
सोनिया-राहुल, गरिमा-गुंजन
डॉ. निमिषा-डॉ. आधार, नेहा-जितेन्द्र
आयुषी, सानू

प्रतिष्ठान

- विजय जनरेटर एण्ड इलै. स्टोर (अलवर)
- जैना ट्रेडर्स, विकास इलैक्ट्रिकल्स (अलवर)
- जैन मशीनरी एण्ड जनरेटर (मुबारिकपुर)
- रिषभ जनरेटर, गर्वित फोटो स्टेट (मुबारिकपुर)

In Loving Memory of

Late Sh. Shyamlal Ji Jain & Late Smt. Jaidevi Ji Jain

Raj Kumar Jain - Sushila Jain
(Son & Daughter in Law)
Vikas Jain - Babita Jain
Vipin Jain - Ritu Jain
(Grand Son & Grand Daughter in Law)
Abhilasha Salecha - Nitin Salecha
Manisha Jain - Sanjeev Jain
(Grand Daughter & Grand Son in Law)

JAPAN KARATE-DO NOBUKAWA-HA SHITO-RYU KAI INDIA

UNIT-RAJASTHAN

LEARN

KARATE CLASSES

1. Self Defence Course.
2. Black-Belt Training Programme.
3. Yoga Training For Karate Students.
4. Organise District, State, National, International Championships & Training Programme.

FRENCH CLASSES

1. Prepare For Basic French Language.
2. Prepare For Delf Exam. (Conduct by Allaince De Français)

CONTACT :

Vipin Jain

3rd Dan Black Belt

Chief Karate Instructor of Rajasthan & West India Coordinator

9829180895

www.karatedorajasthan.com

Firm :

Jain Packing Materials

(Traders of Packing Materials & Machines)

46, Royal Complex, Medical Market, Near Railway Station, Ajmer (Raj.)

Residential Address :

464, "Shyam Sadan", Near Palliwal Digamber Jain Temple, Pal Bichla, Ajmer

अष्टम् पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री रमेश चन्द्र जी जैन

(समाज के कर्मठ कार्यकर्ता)

(13-05-1938 - 03-11-2012)

कुछ अधूरे सपनों को छोड़कर आप अचानक ब्रह्मलीन हो गये। आपकी लगनशीलता, कर्मठता और धर्म के प्रति आस्था हमारे लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहेगी, परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमें आपके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती रहे।

श्रद्धावनत

श्रीमती कमलेश जैन
(धर्मपत्नी)

पुत्र-पुत्रवधु :
पवन-शारदा
प्रमोद-लवली
विनोद-नीलम
संतोष-सुषमा

पौत्र-पौत्रवधु :
पंकज-भूमि
नीरज-सपना

पौत्र, पौत्री :
विशाल, विवेक, विकास, आयूषी, तनू, रिया, युवान, लव्या

पुत्री-दामाद :
आशा-अजीत
रेखा-गिरीश

पोती-दामाद :
आरती-डॉ. मनोज
भावना-राहुल
मोनिका-आशीष
सोनम-मोहित

प्रतिष्ठान :
पवन जनरल स्टोर, अछनेरा
जैन बुक कम्पनी, अछनेरा
जैन सेल्स एजेन्सीज, अछनेरा

निवास स्थान :
म.नं. 2262, 63 मो० रठिया, भरतपुर रोड, अछनेरा (आगरा)
मो.: 8909976072, 9897016695, 9998457035, 9411600824

सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।

वर की तलाश

★ **शालु जैन** पुत्री श्री महेश चंद जैन, जन्मतिथि 13.05.1992 (11:30 बजे), कद– 5'–2'', शिक्षा– एम.ए., बी.एड., गोत्र : स्वयं– नोलखिया, मामा– कोटिया, सम्पर्क : बोदला, सेक्टर 4, जिला आगरा, मो.: 9058974257 *(सितम्बर)*

★ **विधि जैन** पुत्री श्री अनिल जैन, जन्मतिथि 2.11.1993 (प्रातः 7:40, जयपुर), कद 5'–1'', शिक्षा– बी.ई. (ई.सी.), जॉब– टी.सी.एस. पुणे, वार्षिक आय 4.80 लाख, गोत्र : स्वयं– चांदपुरिया, मामा– नागेश्वरिया, संपर्क : 11– बी, ओल्ड पलासिया, 303, सुसंपदा अपार्टमेंट, इंदौर– 452001, मो.: 9926063720, फोन 0731– 4986515 *(सितंबर)*

★ **प्रगति जैन** (मांगलिक) पुत्री श्री सुशील कुमार जैन, जन्मतिथि 26 मार्च 1994 (5:36 बजे), कद 5 फीट, शिक्षा– बी.टेक., कम्प्यूटर साईन्स, जे.ई.सी.आर.सी. जयपुर, जॉब– आफिसर स्केल–1, बैंक आफॅ बड़ौदा, गौत्र : स्वयं– राजोरिया, मामा– बहेतरिया, सम्पर्क : 119/69, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर, मोबाईल : 9829671599, व्हाट्सएप : 8233091599 *(अक्टूबर)*

★ **Ankita Jain** D/o Sh. Anil Kumar Jain, DoB 02.06.1995 (at 1:45 PM, Palam, Delhi), Height- 5'-1", Education- B.Tech (EC) from Agra, Job- SAP BPC Consultant, Gotra : Self- Barwasia, Mama- Lohkarodiya, Contact : FLAT-8, Jagan Plaza, Near PNB Bank, Belanganj, Agra, Mob.: 9457001046, 7895576347, Email : jainshub64@gmail.com *(Sep.)*

★ **Anamika Jain,** DoB 04.10.1995 (at 1:30 PM, Kota), Education- MA in English, Contact : Ravindra Kumar Jain, 202, Manak Bhawan, Janakpuri, Mala Road, Kota Jn., Mob.: 9413276409 *(Sep.)*

★ **Namrata Jain** D/o Sh. Rajesh Kumar Jain, DoB 10.07.1995 (at Bharatpur), Height- 5'-7", Education B.Tech. (EC), Gotra : Self-Chandpuriya, Mama- Chorbambar, Contact : P-31, Shyam Enclave, Sirsi Road, Jaipur, Mob.: 9001067635, 7300322058 *(Sep.)*

★ **Jagrati Jain** D/o Sh. Hemant Jain, DoB 02.05.1994 (at 12:55 AM, Agra), Height 5'-2", Color Fare, Education BA & Polytechnic in Textile from Dayalbag University, Agra, Self employed, Earning 3.6 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Rajoriya, Contact : 20/97, Pili Kothi, Dhuliyaganj, Agra-3, Mob.: 9058622421, 9219984408 *(Sep.)*

★ **Soumya Jain** D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 01.09.1993 (at 5:27 am, Alwar), Height- 5'-3", Fair Color, Education- M.Com. (ABST), B.Ed., Gotra : Self- Chorbambar, Mama- Maimuda, Contact : 526, Lajpat Nagar, Scheme No. 2, Alwar-301001, Mob.: 8005710768, 9461192798 *(Sep.)*

★ **Priya Jain** D/o Sh. Anil Jain, DoB 26.02.1996, Height 5'-2", Fair Colour, Education- B.Sc., Diploma in Accounting, Occupation- Business (GST Account Training Sansthan), Gotra : Self- Chandpuria, Mama- Lohkarodiya, Contact : B-33, Janakpuri, New Sahaganj, Agra, Mob.: 9897012342 *(Sep.)*

★ **Priyanka Jain** (Manglik, Divorced) D/o Sh. Saral Kumar Jain, DoB 06.08.1985 (at Aligarh), Height 5'-2", Fair Colour, Education- B.A., Gotra : Salf-Jewaiya, Mama- Sankhiya, Contact : Jain Street, Chippite, Aligarh, Mob.: 6395288036, 9219564451 *(Sep.)*

★ **Priyanka Jain** D/o Sh. Lokesh Kumar Jain, DoB 28.05.1996 (at 10:00 am, Alwar), Height- 155 cm., Education- MBA, Gotra : Self- Chaudbambar, Mama- Kotiya, Contact : Sh. Lokesh Kumar Jain, Jain Petrol Pump, Laxmangarh, Dist. Alwar, Mob.: 9414812360, 9887354080, Email : nitesh19jain@gmail.com *(Oct.)*

★ **Bhawna Jain** D/o Sh. Mukesh Kumar Jain, DoB 24.09.1993 (at 6:05 am, Bharatpur), Height- 5'-3.5:, Education- Chartered Accountant, Service- CITI Bank, Mumbai , Gotra : Self- Kotiya, Mama- Gindodia, Contact : Q.No. RE/Type-III/1141, Railway Colony, Kota Junction *(Oct.)*

★ **Shweta Jain** (Manglik) D/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 25.06.1993 (at 10:30 am, Kherli), Height 5'-4", Education- M.A. (Geography) & B.Ed., Gotra : Self-Kotiya, Mama- Rajoriya, Contact : Jain Colony, Ward No. 2, Kherli, Alwar, Mob.: 8058986363, 8171662074 *(Oct.)*

★ **Amisha Jain** D/o Sh. Ajay Kumar Jain, DoB 31.12.1995 (at 6:15 pm, Agra), Height 5'-2", Education- MBA (Finance) from DEI, Agra, Occupation- Working as Deputy Manager in Bank of Maharashtra (Govt.) Mumbai, Gotra : Self- Baroliya, Mama-Behteriya, Contact : 2, Mahendra Enclave, Nehru Nagar, Agra, Mob.: 9412158607 *(Oct.)*

★ **Srishti Jain** D/o Sh. Sudhir Kumar Jain, DoB 26.06.1991 (at 8:15pm, Aligarh,, U.P.), Height 5'-2", Wheatish Fair Slim, Education- B.Sc., B.Ed. (TET Cleared), Teacher Pvt. School, Rs. 10,000/- P.M., Gotra : Self-Jevaria, Mama- Gangerwal, Contact : 35, Jain Street, Palki Khana, Aligarh-202001 (U.P.), Mob.: 8126067350, 9460023151, Email : jain.sajan@yahoo.co.in *(Oct.)*

★ **Yukta Jain** (Manglik) D/o Sh. Satyendra Kumar Jain, DoB 16.11.1993 (at 9:35 am, Agra), Height- 5ft., Education- M.Com., B.Ed., Profession- Teacher, Gotra :Self- Chaurbambar, Mama- Kotiya, Contact : H.No. 9, Vishv Karma Vatika, Shahganj Road, Bodla, Agra-282007, Mob.: 7520615933, 9410857876 *(Oct.)*

★ **Rachna Jain** (Manglik) D/o Sh. Virender Jain, DoB 19.09.1993 (at 9:30 am, Gangapur), Height- 5'-4", Education- B.Tech, Occupation- Software Developer, Ciena ,Gurgaon, Gotra : Self- Barolia, Mama- Choudhary, Contact : 2355, Air Force Road, NIT Faridabad, Haryana, Mob.: 9582262622, 9953180616, Email : rachna.jain2355@gmail.com *(Oct.)*

★ **Pratibha Jain** D/o Sh. Pradeep Kumar Jain, DoB 11.10.1995 (at 3:25 am, Jaipur), Height- 5'-5", Education- B.Tech, Occupation- Electro Technical Officer in Maersk Line Shipping Corporation, Gotra : Self- Kotia, Mama- Bayaniya, Contact : 35/124, Rajat Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9414386658, 7976290847, 0141-2394873, 9460723972 *(Oct.)*

★ **Neha Jain** D/o Sh. Nirmal Kumar Jain, DoB 10.10.1994 (at 04:15 am, Abu Road), Education- B.Tech.(EC), M.Tech. (persuing), Gotra : Self- Januthariya, Mama- Ved Vairashtak, Contact : 274, Gandhi Nagar, Abu Road (Raj.), Mob.: 9929303643, 9413847566 *(Nov.)*

★ **Neha Jain** (Manglik) D/o Sh. Manoj Kumar Jain, DoB 24.05.1994 (at 06:55 am, Laxmangarh, Alwar), Height- 5ft., Fair Complexion, Education- B.Tech (CSE), Jyoti Vidyapeeth Womens University, Jaipur, Professional Info Designation- Deputy Manager at Reliance Jio, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Athvarsiya, Contact : Near Jain Temple, Main Market Road, Laxmangarh, Alwar, Mob.: 9414906441 *(Nov.)*

★ **Deeksha Jain** D/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 07.08.1983 (at 10:15 am, Agra), Height- 5'-4", Education- B.Com., M.B.A., Job- Analyst in E.Y. Noida, Income- 5 LPa, Gotra : Self- Badaria, Mama- Chorbambar, Contact : 325, Jaipur House, Agra-02, Mob.: 9997039641, Ph.: 0562-4031148 *(Nov.)*

★ **Ananta Jain** D/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 23.09.1991 (at 4:25am, Agra), Height- 5'-6", Education- B.Tech in ME from BIET Jhansi & M.Tech in ME from IIT Jodhpur, Gotra : Self- Salavadiya, Mama- Khair, Contact : 181-A, Second Floor, Panchvati Parsvnath, Fatehabad Road, Agra, Mob.: 9549995511, Email : jainanant@indianoil.in *(Nov.)*

वधू की तलाश

कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें

★ **डॉ. राजेश जैन** पुत्र श्री धर्मचंद जैन (इरनिया वाले, हाल धोलका गुजरात), जन्मतिथि 26 सितंबर 1995, कद– 5'–11'', शिक्षा– बी.डी.एस., व्यवसाय– डेंटल क्लिनिक, गौत्रः स्वयं– नंगेसुरीया, मामा– धाती, सम्पर्क : 9724066832, 9377280524 *(सितंबर)*

★ **अदीप जैन** पुत्र श्री दीपक जैन, जन्मतिथि 03.09.1991 (रात्रि 8:48, राजगढ़), कद 5'–11'', शिक्षा– बी.ई. (मैकेनिकल), एमबीए मार्केटिंग (पुणे), नौकरी– असिस्टेंट मैनेजर रिलायंस हेड ऑफिस मुम्बई, वार्षिक आय 7.50 लाख, गोत्र : स्वयं– चौधरिया, मामा– राजोरिया, संपर्क : दीपक जैन, जैन मेडिकल एजेंसी, जय स्तंभ के सामने, राजगढ़ (ब्यावरा) मध्य प्रदेश, मो.: 93009600 51, 9425334417 *(सितम्बर)*

★ **अंकित कुमार जैन** (तलाकशुदा) पुत्र श्री हेमराज जैन, जन्मतिथि 21.10.1989 (प्रातः 4 बजे, हिंडौन सिटी, जिला करौली), कद– 5'–2'', शिक्षा– जीएनएम नर्सिंग, पोस्ट– नर्सिंग ऑफिसर, मासिक वेतन 30 हजार, गोत्र : स्वयं– बड़वासिया, मामा– वहत्तरिया, सम्पर्क : मण्डावरा रोड, रेलवे फाटक के पास, हिंडौन सिटी, जिला करौली, मो.: 9460884 2032, 9461072434, 9602496409 *(सितम्बर)*

★ **सत्यम जैन** पुत्र श्री भोला पंसारी, कद– 5'–5'', शिक्षा– बी.बी.ए., एम.बी.ए., व्यवसाय– होलसेल एवं रिटेल मेडिकल स्टोर भोपाल, आय– 12 लाख लगभग, गोत्र : स्वयं– नंगेसुरिया, मामा– डंगया, सम्पर्क : भोला पंसारी, जौरा, जिला मुरैना, मो.: 9425757414 *(अक्टूबर)*

★ **अंकुश जैन** पुत्र श्री अजीत कुमार जैन, जन्मतिथि 26 जून 1994 (प्रातः 3:07 बजे), कद– 5'–5'', शिक्षा– बी.टेक (मैकेनिकल), जॉब– कैशियर (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इन्डिया), गोत्र : स्वयं– लैदोडिया, मामा– बडवासिया, सम्पर्कः जैन कॉलोनी, खेरली, अलवर, मो.: 9461247544, 9887787705 *(नवम्बर)*

★ **Ishan Jain** S/o Sh. Satyam Kumar Jain, DoB 24.11.1993 (at 3:00 pm, Alwar), Height- 5'-9", Education- B.Tech (E.C.), MBA, Occupation- Working as Sr. Logestice Executive in Zomato, Gotra : Self- Maimunda, Mama- Kashmiriya, Contact : 4/158, Kala Kuan Housing Board, Alwar, Mob.: 9460600748, 9460290624, Email : ishanjain768@gmail.com *(Sep.)*

★ **Deepak Jain** S/o Sh. Makhanlal Jain, DoB 23.2.1993 (at 9:15 am, Hindaun), Height 5'-8", Education- B.Tech., Occupation- AnkTech Software

Pvt. Ltd., Jaipur, Salary- 60,000 per month, Gotra : Self- Divariya, Mama- Nangesuriya, Contact : Karmchari Colony, Block-E, Hindaun City-322230, Mob.: 7597140603, Email : erdeepakjain1993@gmail.com *(Sep.)*

★ **Anubhav Jain** S/o Sh. Arvind Kumar Jain, DoB 08.09.1992 (at 10:45 PM, Alwar), Height: 5'-7", Education: B.Tech, M.Tech, ICT Jaipur, Occupation: Senior Data Developer, Dunnhumby Gurugram, Package: 11 LPA, Gotra : Self- Janthuriya, Mama- Sagarwasiya, Contact : D-72, H.M.M Nagar (Alwar), Mob.: 9414367288 *(Sep.)*

★ **Ankur Jain** (Manglik) S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DOB 31.07.1989 (6:50 pm, Agra), Height 5'-9", Education- Dipl. in Auto Eng., M.Sc., B.Ed., Occupation- Sr. Executive Technical Surveyor, General Insurance, Income- 4 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Contact : 9045216301, 9258065928 *(Sep.)*

★ **Tarun Jain,** DoB 02.05.1989 (at 09:05 AM, Gangapur City), Education B.Tech (C.S.), Profession- Self Business (Patanjali Store, Retails & Wholesale), Contact : Ravindra Kumar Jain, 202, Manak Bhawan, Janakpuri, Mala Road, Kota Jn., Mob.: 9413276409 *(Sep.)*

★ **Priyakansh Jain** S/o Late Sh. Pradeep Kumar Jain (Advocate), DoB 15.01.1993 (at 07:30 AM), Height 5'-11", Education BA, LLB (Hons.), Occupation- Asst. Manager Legal in Aavas Financiers Ltd., Surat, Package 4.5 LPA, Gotra : Self- Bhadwasi, Mama- Kotia, Contact : Mrs. Pramod Jain (Mother), 3, Civil Lines, Alwar, Mob.: 7742705601 *(Sep.)*

★ **Mukul Jain** S/o Sh. Rajendra Naulathiya, DoB 28.081992 (at Jaipur), Height 5'-10", Education- B.Tech. (Mechanical), Job- Sales Officer in BPCL (Bharat Petroleum) Govt. Job, Package- 20 LPA CTC, Gotra : Self- Naulathiya, Mama- Vilwal, Contact : 118/25, Jhalana Chhod, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 9829059148, 9828059148 *(Sep.)*

★ **Anuj Jain** S/o Sh. Nanak Chad Jain, DoB 02.11.1993 (at 1:20 AM, Kukthala), Education B.Com., Job- Accountant, Income 25,000/- p.m., Gotra : Self- Bderiya, Mama- Gindorabaks, Contact : 394, Runkata, Agra, Mob.: 8650635168, 9557511117 *(Sep.)*

★ **Akant Jain** S/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 13.11.1988 (at 8:02 am, Alwar), Height 5'-8", Education- B.Tech. in Electronics and Communication and MBA in Marketing and Finance, Working as Advisor Marketing in Rays Power Infra Pvt. Ltd. Jaipur, Package 8 LPA, Gotra : Self- Rajeshwari, Mama- Maleshwari, Contact : Sh. Suresh Chand Jain, Jain Bhawan, Gali No. 11, Mohalla Darukutta, Road No.2, Alwar-301001, Mob.: 9414641566, Ph.: 0144-2345479, Email : prateek_liet1@yahoo.com *(Sep.)*

★ **Anuj Jain** S/o Sh. Chandra Shekhar Jain, DoB 12.8.994 (at 2 am), Height 5'-4", Education B.Com., Occupation- Business, Gotra : Self- Barvasiya, Mama- Baderiya, Contact : 43/209, Jain Gali, Sikandra, Agra, Mob.: 8958126285 *(Sep.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Sushil Kumar Jain, DoB 24.07.1995, Height 5'-4", Education- B.A., G.N.M Diploma (Nursing Course), Occupation- Business (Subham Traders), Income- 6.5 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Chorbambar, Contact : Ward No. 2, Jain Colony, Kherli, Alwar, Mob.: 8058582212, 8079025058 *(Sep.)*

★ **Deepak Jain** S/o Sh. Shesh Kumar Jain, DoB 29.07.1987 (at 4:00 AM), Education- B.Com., Job- Gyan Dairy, Lucknow, U.P., Salary- 80,000 per Month, Gotra :Self- Saketia, Mama- Gangelwal, Contact : 30-A, Gujaini, Kanpur-208022, Mob.: 9236093222, 9648247002 *(Sep.)*

★ **Nitesh Jain** S/o Sh. Virendra Kumar Jain, DoB 20.11.1993 (at Kherli), Height- 5'-5", Education- B.Tech, Occupation- Business (Computer Bite Technology Pvt.Ltd.), Gotra : Athversia, Contact : 66, Dr. Habib Marg, Gandhi Path, Vaishali Nagar, Jaipur, M.: 8824201815, Email : nitesh123@gmail.com *(Sep.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 27.08.1994 (at 9:30 PM), Height- 5'-7", Education- B.Com., MBA, Working in HDFC Bank Ltd. Agra, Salary- Rs. 20,000/- per Month, Gotra : Self- Bhadarwasia, Mama- Gindora Bux, Contact : 43/223, Near Jain Mandir, Jain Gali, Sikandra, Agra-282007, Mob.: 9897303171, Email : abhajain2018@gmail.com *(Sep.)*

★ **Deepak Jain** S/o Sh. Jinesh Jain, DoB 01.05.1986 (at 11:30 PM, Rohtak), Height- 5'-8", Education- MBA (Retail Management), Working in Future Retail Ltd. as Warehouse Manager (SCM) at Sec. 18, Noida, CTC Rs. 6 LPA, Gotra : Self- Goel, Mama- Garg, Contact : Khasra No. 871, B Block, Gali No. 24, Phase 1, Road No. 6, Near Khatu Shyam Mandir, Shyam Vihar, New Delhi-110043, Mob.: 9210724883, 9268447220 *(Oct.)*

★ **Keshav Jain** S/o Sh. Tara Chand Jain, DoB 12.04.1992 (at Laxmangarh), Height- 5'-8", Education- M.Sc. (Environment Science), Working as Area Business Manager in Pharmaceutical Co., Gotra : Self- Choudhary, Mama- Baderiya, Contact : Jain Juice Centre, Indira Market, Laxmangarh (Alwar), Mob.: 9887299309, 8504999625, Email : keshavjain2@gmail.com *(Oct.)*

★ **Rohit Jain** S/o Late Sh. Pramod Kumar Jain, DoB 28.05.1994 (at 11:50 pm, Laxmangarh Alwar), Height- 172 cm., Education- B.Tech., Job- Software Engineer, Jaipur, Gotra : Self- Chaudbambar, Mama- Dhati, Contact : Sh. Lokesh Kumar Jain (Tauji), Jain Petrol Pump, Laxmangarh, Dist. Alwar, Mob.: 9414812360, 6350160386, Email : rohit1994@gmail.com *(Oct.)*

★ **Nilesh Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain DoB 30.06.1985 (at1:22 pm, Ajmer), Height 5'-8", Education- M.Com, MBA, Occupation- Working as a State Head at Manba Finance Ltd. Co. Jaipur, Income 10.50 LPA, Gotra : Self- Maimunda, Mama-

Chorbambar, Contact : 11/40, Kaveri Path, Mansarover, Jaipur, Mob.: 9829818894, 9983444198 *(Oct.)*

★ **Kshitij Jain** S/o Sh. Satish Chand Jain, DoB 25.10.1989 (at 06:45 am, Delhi), Height 5'-11", Education- MCA, Working in an IT MNC, Noida, Salary- Rs. 11 LPA, Gotra : Self- Vairashtak, Mama- Januthariya, Contact : Flat No. 612, Tower C, Gaur Sports Wood, Sector 79, Noida, Mob.: 9871981382, 9650334767, Email : sjainchand@gmail.com *(Oct.)*

★ **Prateek Jain** S/o Sh. Mukesh Kumar Jain, DoB 29.08.1991 (at 6:30 pm, Bharatpur), Height- 5'-7", Education- B.Tech., Government Service- Baroda Rajasthan Khsetriya Gramin Bank, Kota, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Gindodia, Contact : Q.No. RE/Type-III/1141, Railway Colony, Kota Junction *(Oct.)*

★ **Prince Kumar Jain** (Anshik Manglik) S/o Sh. Yogesh Chand Jain, DoB 02.03.1989, Height 5'-8", Education- MBA, Working as Assistant Manager in AU Small Finance Bank, Package 4 LPA, Gotra : Self- Bayaniya, Mama- Maimunda, Contact : C-326, Surya Nagar, Alwar, Mob.: 9414857271 *(Oct.)*

★ **Ankit Palliwal** S/o Sh. Nirmal Jain, DoB 06.11.1988, Height 5'-10", Education- M.Sc in applied Geographic Information System from National University of Singapore, M.Sc in Economics from Indian Institute of Technology Kanpur, Occupation- Manager, Central Office Union Bank of India, Mumbai, Gotra : Self- Ledoriya, Mama- Kotiya, Contact :105/ 119, Vijay Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 8696924329, 9532033922, Email : jain.kr.nirmal@gmail.com *(Oct.)*

★ **Rohit Kumar Jain** S/o Sh. Gyanchand Jain, DoB 28.11.1994 (at 7:00 am, Bharatpur), Height 5'-7", Education- B.Tech (E.C.E), Working as Application Development Analyst in Accenture, Pune, Income 6 LPA, Gotra : Self- Khair, Mama- Salawadia, Contat : 9460737358, 7976360536, 9896009921, Email : rohitsonu33@gmail.com *(Oct.)*

★ **Shubham Jain** (Manglik) S/o Sh. Dinesh Chand Jain, DoB 22.07.1993 (at 8:58 am, Bharatpur), Height 5'-8", Education- B.Tech (Electrical and Electronic Engineering from NIT Trichy), Occupation- Senior Data Scientist in Course5 Intelligence at Bangalore, Income 19 LPA, Gotra : Self- Kashmeriya, Mama- Baderiya, Conatct : 6-L-3, Mahaveer Nagar Extension, Kota- 324009, Mob.: 9414677093, 9785018193, Email : jainshubh2207@gmail.com *(Oct.)*

★ **Karan Jain** S/o Sh. Tilak Jain, DoB 24.01.1994 (at 7:58 pm, Alwar), B.Com., Post Graduation in Banking & Finance, Job-Relationship Manager in ICICI Bank, Alwar, Income 5.6 LPA, Gotra : Self- Maimuda, Mama- Kaloniya, Contact : 316, Arya Nagar, Alwar, Mob.: 9414367669, 7726884348 *(Oct.)*

★ **Manish Jain** S/o Sh. Diwan Kapoor Chand Jain, DoB 09.05.1988 (at 01:10 pm, Alwar), Height 5'-6", Education- B.Tech (ECE) from NIT Jaipur, Gold Medlist, Presently Working as Sr. Lead UI/UX Associate at Noida, Package- 32.5 LPA (Fixed Component), Gotra : Self- Amiya, Mama- Chaudhary, Contact : Diwan ji ki Haweli, Baderia Padi, In front of Saint Niwas, Alwar, Mob.: 9529220424, 7303079218, 9783565383, Email : manish9may@gmail.com *(Oct.)*

★ **Agam Jain** S/o Sh. Pramod Kumar Jain, DoB 15.03.1992 (at 6:15 PM, Alwar), Height- 5'-10", Education- B.Sc. (University of Delhi), MS(IT) (VIT, Vellore), Occupation- Software Engineer in Salesforce (Hyderabad), Salary- 20+ LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Salawadia, Contact : Faridabad, Haryana, Mob.: 9911499282 *(Oct.)*

★ **Aditya Jain** S/o Sh. Kailash Kumar Jain, DoB 02.01.1992, Height- 5'-9", Education- B.Com. (H) from Delhi University, Profession- Finance Associate in Genpact (MNC), Income- 4 LPA, Gotra : Vairashtak, Contact : Flat No. 325, Paradise Apartment, Plot No.1, Sector-9, Dwarka, New Delhi-110077, Mob.: 9910889353 , Email : jain36317 *(Oct.)*

★ **Siddharth Jain** S/o Sh. Surendra Kumar Jain, DoB 05.04.1993 (at 2:20 am,Aligarh), Height- 5'-9", Education- B.Tech. (Electronics & Tele-comminucation), Occupation- Consultant at Capgemini India Pvt. Ltd., Bangalore, Package- 11 LPA, Gotra : Self- Saketia, Mama- Kathotia, Cotact : B-4, First Floor, Arihant Apartment, Khirni Gate, Police Chowki, Near Jain Mandir, Aligarh., Mob.: 9411466838, 8433217092, Email : 05siddharthjain @gmail.com *(Oct.)*

★ **Abhay Jain** (Manglik) S/o Sh. Prakash Chandra Jain, DoB 20.11.1993 (at 7:25 am), Height- 5'-11", Education- B.Tech (Electronics & Communication) (Hons.), Working in KPMG, Bangalore as Data Scientist, CTC 9 Lakhs, Gotra : Self- Chorbhamar, Mama- Behtariya, Contact : Meera Kunj, Mandawara Road, Jain Colony, Hindaun City, Mob.: 9024320476, 9667810819 *(Oct.)*

★ **Jitendra Jain** S/o Late Sh. Mahesh Chandra Jain, DoB 02.10.1989 (at 09:20 am), Height- 5'-6", Education- BCA, MCA, B.Ed., Job- Software Developer (Working in Noida), Salary- 40,000 p.m., Gotra : Chorambaar, Mama- Rajoriya, Contact : 56, Ram Jeet Nagar, Albatiya Road, Shahganj, Agra, Mob.: 9719036463, 9458815424 *(Oct.)*

★ **Rohit Kumar Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 27.02.1990 (at 6:45 am, Agra), Height- 5'-4", Education- Dip. in G.N.M. JWB, District Hospital at Agra, Gotra : Self- Salabadiya, Mama- Chorbambar, Contact : 51/213-A, Dashrath Kunj, Arjun Nagar, Agra-282001, Mob.: 9410204255, 9457386486 *(Oct.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Roop Chand Jain, DoB 05.05.1993 (at 8:15 am, Agra), Height- 5'-8", Fair Complexion, Education- MBA, M.Com, Occupation- Deputy Sales Manager (Tata Capital Financial Services Ltd., Agra), Gotra : Self- Kotiya, Mama- Khair, Contact : 5E/18, Ashok Vihar, 100 Feet Road,

Sahaganj, Mob.: 9358685310, Email : rjain7137@gmail.com *(Oct.)*

★ **Sumit Jain** S/o Sh. Lochan Das Jain, DoB 05.06.1991 (at 7:30 pm, Morena), Height 5'-9", Education- BE (Mech.) from IET (Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore), Occupation- Auditor in Ministry of Defence (Finance), Package 7 LPA, Gotra : Self- Baribar, Mama- Kashmiria, Contact : Near K.S. Mill Nainagarh Road Morena (M.P), Mob.: 8463022852, 9755284934 *(Nov.)*

★ **Shashank Jain** (Mangalik) S/o Sh. Anil Kumar Jain Bajaj, DoB 21.021992 (at 6:30 am, Agra), Height- 5'-7", Education- MCA, Job- Working in Iskpro Ltd. Noida as a Senior Software Tester, Gotra : Self- Ladodiya, Mama- Rajeshwari, Contact : C-153, Subhash Nagar, Kamla Nagar, Agra-282005, Mob.: 9634074088, 9927463181, Email : aniljainbajaj@gmail.com *(Nov.)*

★ **Abhinav Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 22.12.1994 (at 7:53 am, Agra), Education- B.Sc., Job- Assistant Manager in Aryavart Bank, Height- 5'-6", Gotra : Self- Salavadia, Mama- Kotia, Contact : Balaji Puram, Shahganj, Agra (U.P.), Mob.: 9319213080 *(Nov.)*

★ **Ayush Jain** S/o Dr. S.C. Jain, DoB 04.01.1993 (at 10:25 pm, Delhi), Height 5'-9", Education- B.E. (ECE), ITM Gurgaon University, Job- Telecom Engineer, Orange Business Services Gurugram, Income- 7.5 LPA, Gotra : Self- Sangeswari, Mama- Kotia, Contact : 1188, Sec. 15, Part 2, Gurgaon, Mob.: 9810180183, 8826267521 *(Nov.)*

★ **Vivek Jain** S/o Sh. Mahavir Prasad Jain, DoB 22.08.1992 (8:00AM, Joura), Height- 5'-8", Education- M.Tech (IIT Kharagpur), Job- Govt. Engg. in National Fertilizers Limited (Ramagundam), Income- 12 LPA, Gotra : Self- Mahila, Mama- Lohekadere, Contact : 9179536566, 6239737587 *(Nov.)*

★ **Aditya Jain** S/o Sh. Uttam Jain, DoB 12.10.1990 (at 11:20 pm, Alwar), Height- 5'-6", Education- B.Tech (ECE), M.Tech. (Pursuing from BITS Pilani), Occupation- Senior Software Engineer Accenture - Gurgaon, Package 10 LPA, Gotra : Self- Kashmeria, Mama- Choudhary, Contact : Janakpuri-II, Imli Phatak, Jaipur, Mob.: 9414405532 *(Nov.)*

★ **Anirudh Jain** S/o Sh. Sanjay Kumar Jain, DoB 08.01.1995 (at 5:38 PM), Height 5'-8", Education- BA, LLB, CS, Business- Director at S.K. Law and Company, Vishwakarma Complex, Agra (UP), Gotra : Self- Barbasiya, Mama- Varivar, Contact : 96, Jain Nagar Khera, Firozabad, Mob.: 9412265526, 9756600526, Email : anirudh.sklaw@gmail.com *(Nov.)*

★ **Abhinav Jain** S/o Sh. Abhinandan Jain, DoB 24.02.1993 (at 11:53 pm, Alwar), Height 5'-9", Education- B.Com. (Rajasthan University), Accounting Software- Tally & Busy, Preparing for Govt. Examination, Job Profile: Marketing Supervisor at Deepak India Pvt. Ltd., MIA Alwar, Gotra : Self- Ameshwari, Mama- Salavdiya, Contact : Opp. Geeta Press, Shikari Para, Munshi Bazar, Alwar, Mob.: 9414811460, 9079625770 *(Nov.)*

★ **Mehul Jain** S/o Sh. Ashok Jain, DoB 31.07.1995 (at Jaipur), Education- B.Tech (Computer Science) SRM University Chennai, Occupation- System Engineer at Infrrd, Bengaluru, Gotra : Maimuda, Contact : 658, Mahaveer Nagar-I, Landmark Pooja Tower, Gopalpura Bypass, Jaipur *(Nov.)*

★ **Rohit Jain** S/o Sh.Gyanchand Jain, DoB 28.11.1994 (at 7:00 am, Bharatpur),Height- 5'-6", Fair Complexion, Education- B.Tech (NIT Kurukshetra), Job- Software Engineer (Accenture), Gotra : Self- Khair, Mama- Salawadia, Contact : K.C. Sharma Gali, Near Pratap Sarpanch, Neem Da Gate, Bharatpur-321001, Mob.: 9460737358, 9896009921, Email : rohitsonu33@gmail.com *(Nov.)*

★ **Rahul Jain** S/o Late Sh. Daya Chand Jain (Fateh Chand Jain), DoB 11.07.1993 (at 07:25 am, Harsana- Laxmangarh, Alwar), Height- 5'-11", Education- M.Com, CA (Final), MBA (Pursuing), Occupation- Office Assistant at Rajasthan Marudhara Gramin Bank, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Bhordhangiya, Contact : 5/52, N.E.B Housing Board, Behind Krishi Upaj Mandi, Alwar, Mob.: 9414334467, 9875114063, Email : rtmjain@gmail.com *(Nov.)*

★ **Rishabh Jain** S/o Sh. Arun Jain, DoB 17.11.1993 (at Jodhpur), Height 5'-7.2", Education- Engineering (Auto) SRM University, Chennai, MBA, Job- posted at Kolkata, Reckitt Benckiser (Hygiene Division), Gotra : Self- Kala, Mama- Patni, Contact : C-402, Dew Drops Society, Sector 47, Gurgaon-122001, Mob.: 8527066555, Email : arunuday33@gmail.com *(Nov.)*

★ **Kushal Jain** S/o Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 23.12.1991 (at 7:50 am), Height 5'-8", Education- B.Tech in Information Technology (Hindustan Institute of Technology & Management), Agra, Job- Lead Assistant Manager at EXL Service Pvt Ltd., Oxygen Park, Sector 144, Noida, Gotra : Self- Kotia, Mama- Garg, Contact : 29, Prem Anand Kunj, Brij Bihar Colony, Kamla Nagar, Agra, Mob.: 9897717596, 6395524546, 9528032733, Email : vinodkumarjainagra@gmail.com, kushal.jain63@gmail.com *(Nov.)*

★ **Shrayansh Jain** S/o Late Sh. Sunil Jain, DoB 06.01.1994 (at 11:15 am, Kherli Ganj, Distt. Alwar), Education- Bachelor in Computers Application, Occupation- Junior Assistant Board of Revenue Raj. Ajmer, Gotra : Self- Nagaswaria, Mama- Chodbambar, Contact : Sunil Jain, Kiran Villa, Near Mathur Bhatta, Topdara, Ajmer.(Raj.), Mob.: 9413781308 (Sushil Jain), 9460355313 (Satish Jain) *(Nov.)*

★ **Shiv Jain** S/o Late Sh. Tota Ram Jain, DoB 06.07.1993 (at 12:35 am, Joura), Height 5'-5", Education 10th, Occupation- Shiv Iron Store (Manufacturing), Income 5 to 7 LPA, Gotra : Mahila, Mob.: 7509684399, 8652006887, 7000711623 *(Nov.)*

* * * * *

TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.

TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.

AN ISO 9001:2008 COMPANY

PRODUCTS

-POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS

-PRESSED STEEL RADIATORS

-SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS

-PACKAGE SUBSTATION

CONTACT

Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India

Phone No : +91-562-3290391
Fax : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in

कहानी

झूठे प्यार में बर्बादी

''पापा वैभव बहुत अच्छा है ..मैं उससे ही शादी करूंगी..वरना!!''

पापा ने बेटी नेहा के ये शब्द सुनकर एक घड़ी को तो सन्न रह गए। फिर सामान्य होते हुए बोले– ठीक है पर पहले मैं तुम्हारे साथ मिलकर उसकी परीक्षा लेना चाहता हूँ, तभी होगा तुम्हारा विवाह वैभव से...कहो मंजूर है ?

बेटी चहकते हुए बोली– ''हाँ मंजूर है मुझे... वैभव से अच्छा जीवनसाथी कोई हो ही नहीं सकता.. वो हर परीक्षा में सफल होगा.. आप नहीं जानते पापा वैभव को!''

अगले दिन कॉलेज के बाहर नेहा जब वैभव से मिली तो उसका मुंह लटका हुआ था...

वैभव मुस्कुराते हुए बोला– ''क्या बात है स्वीट हार्ट... इतना उदास क्यों हो... तुम मुस्कुरा दो वरना मैं अपनी जान दे दूंगा।''

नेहा झुंझलाते हुए बोली– ''वैभव मजाक छोडो...पापा ने हमारे विवाह के लिए इंकार कर दिया है...अब क्या होगा ?''

वैभव हवा में बात उड़ाता हुआ बोला– ''होगा क्या...हम घर से भाग जायेंगे और कोर्ट मैरिज कर वापस आ जायेंगें।''

नेहा उसे बीच में टोकते हुए बोली– ''पर इस सबके लिए तो पैसों की जरूरत होगी..क्या तुम मैनेज कर लोगे ?''

वैभव– ''ओह बस यही दिक्कत है...मैं तुम्हारे लिए जान दे सकता हूँ पर इस वक्त मेरे पास पैसे नहीं...हो सकता है घर से भागने के बाद हमें कहीं होटल में छिपकर रहना पड़े...तुम ऐसा करो तुम्हारे पास और तुम्हारे घर में जो कुछ भी चाँदी–सोना–नकदी तुम्हारे हाथ लगे तुम ले आना ...वैसे मैं भी कोशिश करूंगा...कल को तुम घर से कहकर आना कि तुम कॉलेज जा रही हो और यहाँ से हम फुर्र हो जायेंगे...सपनों को सच करने के लिए!''

नेहा भोली बनते हुए बोली– ''पर इससे तो मेरी व मेरे परिवार कि बहुत बदनामी होगी''

वैभव लापरवाही के साथ बोला– ''बदनामी वो तो होती रहती है ...तुम इसकी परवाह मत करो..''

वैभव इससे आगे कुछ कहता उससे पूर्व ही नेहा ने उसके बाएं गाल पर जोरदार तमाचा रसीद कर दिया..

नेहा भड़कते हुयी बोली– ''हर बात पर जान देने को तैयार बदतमीज़ तुझे ये तक परवाह नहीं जिससे तू प्यार करता है उसकी और उसके परिवार की समाज में बदनामी हो ....और तू प्रेम का दावा करता है...बदतमीज़ ये जान ले कि मैं वो अंधी प्रेमिका नहीं जो पिता की इज्ज़त की धज्जियाँ उड़ा कर ऐय्याशी करती फिरूं, कौन से सपने सच हो जायेंगे... जब मेरे भाग जाने पर मेरे पिता जहर खाकर प्राण दे देंगें! मैं अपने पिता की इज्ज़त नीलाम कर तेरे साथ भाग जाऊँगी तो समाज में और ससुराल में मेरी बड़ी इज्ज़त होगी ...वे अपने सिर माथे पर बैठायेंगें... और सपनों की दुनिया इस समाज से कहीं अलग होगी...हमें रहना तो इसी समाज में हैं ...घर से भागकर क्या आसमान में रहेंगें ? है कोई जवाब तेरे पास..''

पीछे से ताली की आवाज सुनकर वैभव ने मुड़कर देखा तो पहचान न पाया.. नेहा दौड़कर उनके पास चली गयी और आंसू पोछते हुए बोली– ''पापा आप ठीक कह रहे थे। ये प्रेम नहीं केवल जाल है जिसमे फंसकर मुझ जैसी हजारों लडकियां अपना जीवन बर्बाद कर डालती हैं!!''

सही कहा बिटिया.....

व्यवहार का जीवन में क्या महत्व है

सही मायने में व्यवहार वो इन्सानियत का रूप है जो सभी लोगों में नहीं पाया जाता है। दुनिया में कुछ ही लोग ऐसे हैं जिनके अन्दर इन्सानियत जिन्दा है जिसके बदौलत यह दुनिया चल रही है। दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जो व्यवहार को समझने में नाकामयाब रहे हैं । जिनका व्यवहार समाज परिवार रिश्तेदारों मित्रों के साथ अच्छा नहीं है, ऐसे लोग सम्बंध बनाने में असफल हुए है। उनको किसी भी प्रकार की जीवन में सफलता नहीं मिल सकी क्योंकि यह दुनिया व्यवहार से ही चल रही है। व्यवहार मनुष्य का ऐसा दर्पण है जिसमें मनुष्य का जीवन झलकता है। व्यवहार जीवन का ऐसा माध्यम है जो परिवार, समाज, रिश्तदारों मित्रों को हमेशा जोड़े रहता है । बिना अच्छे व्यवहार के इन्सान की कहीं भी इज्जत व मान सम्मान नहीं मिलता है चाहे वो गरीब हो निर्धन हो। व्यवहार से ही अच्छा बुरा जीवन बनता है। अच्छे व्यवहार से इन्सान को धन–दौलत प्रेम सभी कुछ मिलता है। अच्छे व्यवहार से टूटे रिश्ते भी जुड़े जाते हैं तथा खराब व्यवहार से अच्छे रिश्ते व सम्बंधों में दरार आ जाती है। जीवन भर के मधुर रिश्ते पल भर में टूट कर धराशायी हो जाते हैं तथा आदमी बेघर हो जाता है। प्रेम व अच्छे व्यवहार से अच्छी से अच्छी तथा बुरी से बुरी, कठिन से कठिन समस्याओं का निराकरण हो जाता है।

प्रेम एक अच्छा व्यवहार है। जीवन में मिठास लाता है। जहां प्रेम है वहीं अच्छा व्यवहार रहता है। बिना प्रेम व अच्छे व्यवहार के जीवन कभी भी नहीं चल सकता है। लाखों करोड़ों का व्यवसाय भी अच्छे व्यवहार से ही चलता है। खराब व्यवहार से इन्सान को जिन्दगी में कुछ नहीं मिलता है। बल्कि खराब व्यवहार या दुर्व्यवहार से लोग सड़क पर आ जाते हैं। ऐसे लोगों को दुनिया में कोई नहीं पूछता है।

–राजेन्द्र जैन
4, सेठीनगर, उज्जैन

माँ तुम क्या हो?

माँ शब्द स्वयं अपने आपसे एक पवित्रता, एक मधुरता तथा आत्मीयपन का द्योतक है। माँ एक ऐसा रूप है जैसा अन्यत्र नहीं–माँ एक ऐसा महल है जिसे कोई न देख सका न जान सका।

माँ एक ऐसा मंदिर है, जहां पर कोई भगवान व देवी देवता नहीं'–मात्र एक अहसास–एक आर्शीवाद का समूह तथा एक भव्यता का द्योतक है।

किसी भी प्राणी का रिश्ता इस संसार में माता से होता है। सभी भाई बहन तथा अन्य रिश्तों का जन्म जन्मोपरांत होता है पर माँ का रिश्ता जन्म के नौ माह पूर्व ही यानि गर्भ से प्रथम प्रवेश के साथ ही जुड़ जाता है। सबसे पहिले प्राणी उसी मकान को देखता है। माँ का गर्भ ही पावनता का वह महत्व है जिसे आज तक कोई देख न पाया है न देख पा सकात है। वह तो मात्र निरीह प्राणी ही अहसास करता है। माँ उसकी अन्नदाता है, उसके मुंह में पहला निवाला माता के खाने के साथ ही जाता है। उसका शरीर माँ से भोजन प्राप्त करता है। और उसी अनुरूप विकसित होता है। धरती पर जन्म लेते ही उसके सामने माँ होती है। प्रसव की असहनीय वेदना को, गर्भ के असहनीय दर्द को, गर्भ में पलते बालक को पाने की कल्पना मात्र से भूल जाती है और उस प्रसव की वेदना को बालक का मुख देखकर हर्षित होकर अपने सीने से लगा लेती है और जैसे ही बालक को देखते है उसके अपना दुग्धपान कराकर सन्तुष्ट करती है। यह वह मंदिर है जहां बिना किसी पूजा उपासना अर्चना के मधुर प्रसाद स्वतः ही माँ के दूध के रूप में मिल जाता है। जिसका न कोई मोल होता है न तोल होता है। वह तो मात्र माँ की ममता व उसके वात्सल्य का प्रतीक होता है। माँ की गोद में बालक को स्नेह प्यार व दुलार मिलता है तथा वह उसका रक्षा कवच होता है। सो सभी प्रकार से सुरक्षित करता है। माँ स्वयं गीले में सोती है और उसे सूखे में सुलाती है। रात भर जागती है नींद कराने के लिए मधुर स्वर में लोरी सुनाती है यह सब क्या है?... माँ का अपनत्व तथा ममता का प्रतीक है। इतना ही नहीं बालक कहीं दूर भी कष्ट में होता है तो माँ को स्वतः एक अहसास हो जाता है। बालक के मुंह से सबसे प्रथम शब्द ही माँ का उच्चारण होता है उसको सुनकर वह फूली नहीं समाती है। यह माँ की महानता है। माँ एक छाया की तरह बालक के साथ रहती है। हमारे भारत में माँ को अन्नपूर्णा कहा है। माँ एक तीर्थ है–क्योंकि इसी के द्वारा दिये गये संस्कार ही उसे जीवन जीना, एक सफल जीवन जीना, एक कल्याणकारी जीवन जीना सिखाते है। भारत वर्ष में माँ का रूप ही अनूठा है यहां तो गंगा मैया जैसी पावनता दी है, जिन वाणी अम्बे माता सदैव पूज्यनीय है। माँ गुरूणां गुरू है'–क्योंकि गुरूओं को भी यह अपने संस्कार देकर ही तो गुरू बनाती है। अभिमन्यु जैसे बालक ने चक्रव्यूह में घुसना गर्भ में ही सीखा था। कुन्द–कुन्द आचार्य ने माँ की लोरी से ही निरंजन आत्मा का ज्ञान किया। छत्रपति शिवाजी के शौर्य की प्रेरक भी माता थी। कहां तक बखान करूं माँ जैसा इस दुनिया में कोई नहीं। कवियों ने कहा है –हे माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी जिसको नहीं देख हमने कभी अब उसकी उसकी जरूरत क्या होगी।

माँ का आर्शीवाद प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है। माँ का आर्शीवाद एक वरदान स्वरूप होता है माँ का वरदहस्त एक छाया प्रदान करता है और माँ के पदचिन्ह कल्याण का मार्ग दर्शन होते हैं। लेकिन आज बहुत बड़ी विडम्बना है कि पश्चिमी वातावरण, रहन–सहन, आचार–विचार, तर्क–वितर्क, भोग–विलास, स्वच्छ वातावरण की चाह, अपने अहं की तुष्टि तथा स्वार्थ के वश होकर माँ के इस महिमामयी रूप को विसरा दिया जा रहा है। आज कई घरों में तो माँ को एक दासी या नौकरानी का दर्जा दिया जा रहा है। जो अपने मुंह का निवाला स्वेच्छा से आपको खिलाती थी, आज उसे स्वयं को अन्न से मोहताज किया जा रहा है। आज भरी सभा में भरे बाजार में माँ को नीलाभ किया जा रहा है। आज उनके लिये वृद्धाश्रम बनाये जा रहे है उसकी अपनी अर्जित सम्पत्ति पर भी धोखे से हस्ताक्षर कराकर कब्जा किया जारहा है। अरे जरा विचार करे जिस माँ ने नौ माह तक तुम्हारा बोझ सहर्ष वहन करा सदा खुशी जाहिर की। आज तुम दो दिन भी यदि एक दो किलो का पत्थर पेट पर बांध कर चल सकते हो नहीं किन्तु यह उसने किया और तुम्हें जीवन दिया, नाम दिया, शिक्षायें दी, आजीविका का ज्ञान दिया, चलना सिखाया एवं प्रतिष्ठा के साथ चलना सिखाया और तुम ही ने उसे जीते जीते जी अपने वचनों से अपने आचरण से, अपने व्यवहार को एक निरही जीवन जीने को विवश कर दिया। अपनों से दूर रखा। क्या यही था उसका त्याग व बलिदान, वृद्धावस्था तो समय का परिवर्तन है जो हर मनुष्य के जन्म के साथ लगा हुआ है। याद रखो–

कंटकमय इस जीवन में, एक कदम नहीं चल पाओगे।
आंसू माँ की आंखों में दे, सुख से नहीं चल पाओगे॥
संभल जाओ, संभल जाओ, माँ की ममता पहचानो।
सांसो और धड़कन में, जानो जीवन में खुशियां लाओ॥
उसे लाचार मत जानो, आंखों में आंखें डाल देखो।
ममता का स्त्रोत पहचानो॥

–श्रीमती सन्तोष जैन
102/117, जय–पारस, मानसरोवर, जयपुर

KOTSONS

POWER & DISTRIBUTION

TRANSFORMERS

Export Award Winners

ACHIEVED 100% GROWTH IN A SINGLE YEAR

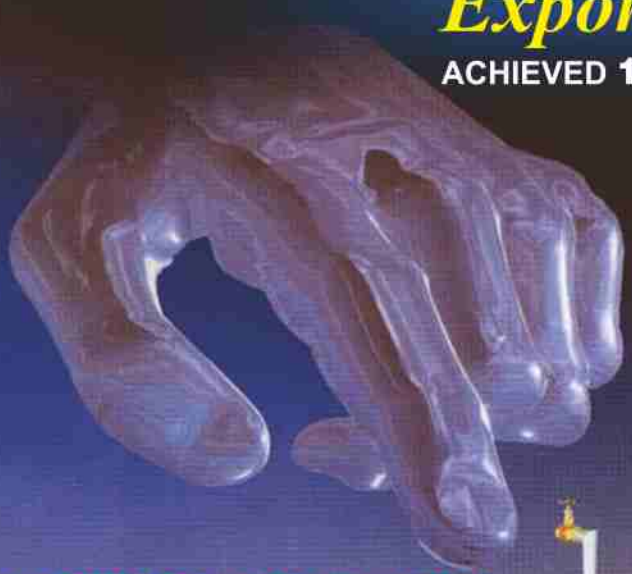

KOTSONS PVT. LTD.

(AN ISO 9001 : 2015 & ISO 14001 : 2015 CERTIFIED COMPANY)

Head Office and Unit-I
Alwar : 217A, 218 to 220 & 230A MIA,
Desula, Alwar-301030
Rajasthan, INDIA
Tel.: +91-144-2881210, 2881211
Email : kotsons@kotsons.com

Unit-II
Agra : C-21, U.P.S.I.D.C., Site-C,
Sikandra, Agra-282007,
U.P., INDIA
Tel.: +91-562-2641422, 264-1675
Email : kotsons@kotsons.com

Registered Office :
New Delhi : A-208 IInd Floor,
R.G. City Centre, Motia Khan,
Pahar Ganj, New Delhi-110055, INDIA
Tel.: +91-011-43537540
Email : kotsons@kotsons.com

DNV

Accredited by the RvA

ISO 9001 QUALITY CERTIFIED
CERTIFICATE No. QSC-3360

OHSAS 45001 : 2018

TRANSFORMING ELECTRICITY
EMPOWERING WORLD

RNI NO. RAJHIN/2012/47438 Postal Registration No. JAIPUR CITY/434/2019-21

RERA Registration No.
RAJ/P/2019/1054
www.rera.rajasthan.gov.in

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl
FORTUNE
3 BHK Boutique Apartments

Your perfect home is now
at a landmark address.

16 Smart Home | 3 BHK | Vastu Friendly | Site : B-138, Mangal Marg, Bapu Nagar, Jaipur

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl India Buildhome (P) Ltd.
"Pearl Suryavanshi", 401, A-5, Sardar Patel Marg,
C-Scheme, jaipur - 302001. INDIA, Ph.: +91 141 4014044

Dr. Raj Kumar Jain +91 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain +91 9829010092

2 Decades of Excellence | 3600 Villas + Plots | More than 500 Apartments | 22 'Pearl' Tower | 6 Townships

PRINTED MATTER
If Undelievered, please return to
श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी होटल क्लार्क,
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर-302018 (राज.)

पत्रिका स्वामी - अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।